श्री संजय शर्मा संग्रहालय एवं शोध संस्थान

कला एवं सांस्कृतिक विरासत का शैक्षणिक केन्द्र

विकास यात्रा की अर्द्ध शती

1955-2019

प्राच्य विद्याओं, दुर्लभ पाण्डुलिपियों, कला एवं वस्तुओं का

प्रमाणिक संग्रहालय
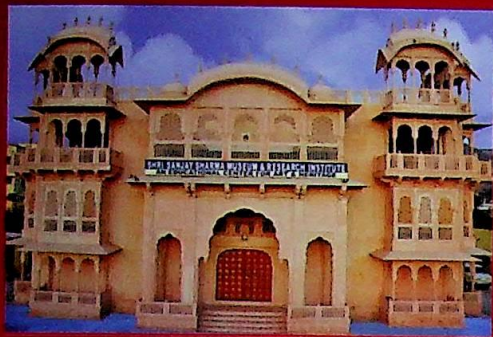
संग्रहालय – एक परिचय

भारतीय कला संस्कृति का अक्षय वट

यह संग्रहालय पंडित राम कृपालु शर्मा की अर्द्ध शताब्दी की साधना का प्रतिफल है। इसमें ऋग्वेद से लेकर 19वीं शताब्दी तक भारत में उदय हुई अनेक सभ्यताओं का लिखित इतिहास 1 लाख से अधिक हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के रूप में मौजूद है। उपरोक्त पाण्डुलिपियाँ भारत की 16 भाषाओं एवं 5 विदेशी भाषाओं अनेक लिपियों में संग्रहीत है। जिसमें धार्मिक विषयों को छोड़कर 200 से अधिक विषय जो गुरुकुल में पढ़ाये जाते थे। उनका भी वृहद संकलन इस संग्रहालय में देखा जा सकता है। उपरोक्त विषयों को आमजन को सहज सुलभ तरीके से समझाने हेतु 14वीं शताब्दी से लेकर 19वीं शताब्दी तक के कागज, कपड़ा, लकड़ी, हाथी दाँत पर चित्रकला भी विद्यमान है। इसके अतिरिक्त अनेक प्राचीन कलाकृतियाँ भी संग्रहालय में बहुतायत से प्रदर्शित हैं।

भारत की सबसे प्राचीन एवं मौलिक शैक्षणिक व्यवस्था को पाण्डुलिपि एवं चित्रों के माध्यम से प्रदर्शित करना हजारों वर्षों से चली आ रही इन प्राच्य विधाओं के विज्ञान को विकसित एवं संरक्षित करना एवं शोध के माध्यम से इस ज्ञान विज्ञान की इस शैक्षणिक विरासत को सम्पूर्ण मानव जाति के लिए उपयोगी बनाना संग्रहालय का आधारभूत उद्देश्य है। एक व्यक्ति द्वारा अपने तन, मन, धन से किया गया यह कार्य न केवल आगुंतकों को मंत्रमुग्ध कर देता है। बल्कि दुष्प्राच्य प्रमाणिक पाण्डुलिपियों, कलाकृतियों, चित्रकारी एवं ऐतिहासिक अभिलेखों के संग्रह को देखकर दर्शक श्रद्धावनत भी हो जाता है। भारतीय प्राच्य विद्याओं एवं संस्कृति के क्षितिज एवं आयामों का भी मार्गदर्शन करता है।

सचिव – तिलक शर्मा

ज्ञानमेव परंज्योतिः
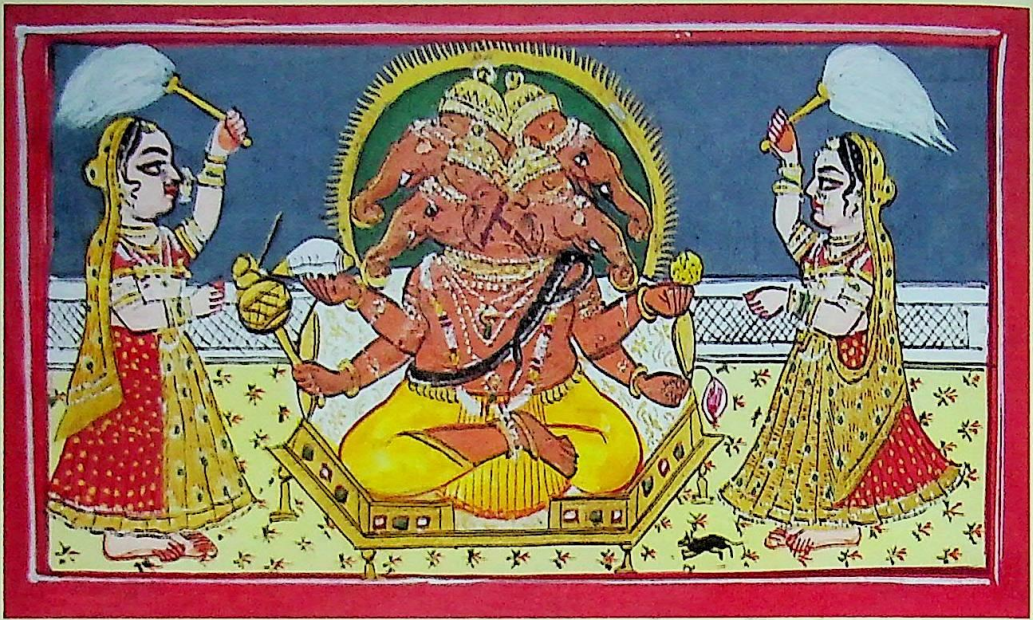
गणपति स्तोत्र संग्रह सचित्र, जयपुर शैली, 1876 ई. सन्, 16.5 x 11 से.मी., कागज पर हस्तलिखित सचित्र ग्रन्थ, प्राकृतिक जल रंगों से निर्मित।

पुण्यात्मा संजय शर्मा

संग्रहालय के प्रेरक
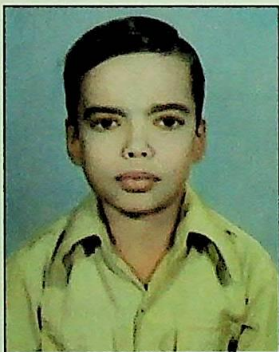
जन्म : 3.4.1966
पुण्य तिथि : 3.3.1982

मेरा कनिष्ठ आत्मज संजय शर्मा बाल्यकाल में ही अपनी विनयशील विनम्रता, बुद्धि प्रखरता तथा वाक्सिद्धि सहित अनेक गुणों के कारण सभी का प्रिय हो गया था। मेरे लिए वह केवल पुत्र ही नहीं अपितु अदृष्ट वरदान का साकार अवतरण था, जो मेरे घर में जन्म लेकर स्वयं तो जीवन-पर्यन्त असाध्य रोग से संघर्ष करता रहा किन्तु मुझे संग्रहालय निर्माण के पुनीत कार्य के लिए संकल्प शक्ति और सामर्थ्य प्रदान कर गया। जन्म-जन्मान्तरों की दृढ़ भक्ति का पुण्य संजोये किसी दिव्यात्मा के रूप में संजय मेरे घर में आया और अपने जीवन की मधुर स्नेहमयी सौरभ बिखेरता हुआ अल्पवय में ही ब्रह्मलीन हो गया। वह हमारे जीवन में ऐसी अमिट छाप छोड़ गया जिसके लिए हम सभी उस दिव्यात्मा के ऋणी हो गये।

उसी पुण्यात्मा के यशःशरीर को चिरजीवित रखने के प्रयोजन से श्री संजय शर्मा के नाम पर इस प्रन्यास का नामकरण कर **'श्री संजय शर्मा संग्रहालय एवं शोध संस्थान'** रखा गया है। हमारे लिए वही इसका प्रेरणास्रोत भी रहा है।

रामकृपालु शर्मा
संस्थापक अध्यक्ष

मुख्य पृष्ठ का चित्र - काँच पर कुन्दन मीना का कलात्मक जड़ाव फूल सामोद स्कूल (जयपुर) 18वीं शताब्दी, माप 2x1.5 से.मी.

आत्म-कथ्य

रामकृपालु शर्मा-संस्थापक

मनुष्य के लिए मार्गदर्शक माने जाने वाले प्राचीन ग्रन्थ हमें जीवन की सार्थकता और उसका महत्त्व बताते हैं। प्राचीन दुर्लभ ग्रन्थों के महत्त्व को देखते हुए श्री संजय शर्मा संग्रहालय की स्थापना की गई है। हस्तलिखित ग्रन्थों और कलाकृतियों के इस समृद्ध संग्रहालय को वर्तमान स्वरूप में साकार करने के लिए इन पंक्तियों के लेखक ने अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया है। पुस्तक के अंत में दिये गये परिचय के रूप में मेरे संघर्षशील जीवन को संक्षेप में वर्णित किया गया है। प्रारम्भिक जीवन में विपन्नता, अर्थाभाव और प्रतिकूलताओं के कारण 27 वर्ष की आयु तक पहुँचते-पहुँचते रचना कर्म के साथ-साथ मुझे जीवन की क्षणभंगुरता की समझ भी आ गई थी। तभी मैंने यह संकल्प ले लिया था कि मुझे आत्मिक रूप से सजग रह कर धन संचय करते हुए जीवनयापन करना चाहिए। साथ ही क्षण-क्षण व्यतीत होते जीवन के महत्त्व को समझते हुए इसे अपनी क्षमता के अनुसार श्रेय मार्ग की ओर अग्रसर होना चाहिए।

आर्थिक संकट के दौरान 18 वर्ष की आयु में मेरी प्रथम गद्य-पद्यमयी पुस्तक 'प्रांजलि' सन् 1954 में प्रकाशित होने के बाद मेरी दूसरी पुस्तक 'वाङ्मयी' तैयार हो गई, लेकिन अर्थाभाव के कारण यह प्रकाशित नहीं हो सकी तो उसका अवसाद मेरे मन को इस कदर दुःखी कर गया कि मुझे पुस्तक प्रकाशन से विरक्ति-सी हो गई। व्यथित मन में यह विचार आने लगा कि ''तुम अपनी 'वाङ्मयी' को छपाने के लिए क्यों इतना अधीर हो रहे हो, देश में तो अनेक ऋषिकल्प मनीषियों द्वारा रचित हजारों ग्रन्थ प्रकाश में आये बिना अंधकार में पड़े हुए हैं, कुछ ग्रन्थ तो उत्तराधिकारियों की उदासीनता और अज्ञानता के कारण काल-कलवित भी हो गए हैं, इसलिए अपनी 'वाङ्मयी' को प्रकाशित कराने की छटपटाहट छोड़कर भारतीय 'वाङ्मयी' के संरक्षण की दिशा में सोचो तभी कुछ सार्थक होगा।'' ऐसे ही विचारों और 'वाङ्मयी' के अप्रकाशित रहने की अन्तर्वेदना ने मन में हस्तलिखित ग्रन्थों के संग्रह और संरक्षण के लिए ऐसा संकल्प जाग्रत हुआ कि मैं अविराम गति से ग्रन्थ संग्रह में संलग्न हो गया और अद्यावधि इसी कार्य में दत्तचित्त रहता हूँ।

सर्वप्रथम मेरे द्वारा 4 दुर्लभ ग्रन्थों की खरीद से इस कार्य का श्रीगणेश किया गया। बाद में फिर मैंने देश के विभिन्न भागों में यात्रा करना शुरू कर दिया। आर्थिक तंगी के कारण कार्य काफी कठिन था, लेकिन मेरे संकल्प की दृढ़ता ने मुझे विचलित नहीं होने दिया। पचास के दशक में एक निजी संस्थान में काम करने लगा, तत्पश्चात हस्तलिखित ग्रन्थों (पांडुलिपियों) और कलात्मक सामग्री खरीदकर संग्रह करने लगा। अधिक अर्थप्राप्ति के उद्देश्य से ज्योतिष का काम भी करने लगा। हिन्दी, संस्कृत व

राजस्थानी के अलावा अन्य भाषाओं और लिपियों के ग्रन्थ भी संग्रह हेतु क्रय करने लगा। इनमें से कुछ दुर्लभ ग्रन्थों का तो मुझे अधिक मूल्य देकर भी आनन्द का अनुभव होता था। प्रयास करने के बाद भी जब कभी किसी कारणवश अच्छे ग्रन्थ प्राप्त नहीं होते तो मन उदासीनता से व्यथित हो उठता था।

संकल्प के अनुरूप संघीजी के रास्ते में किराये के मकान में स्थापित शर्मा ग्रन्थ संग्रहालय का 24 अप्रैल, 1970 को केन्द्रीय शिक्षा राज्य मंत्री श्री भक्त दर्शनजी के द्वारा उद्घाटन सम्पन्न हुआ। मंत्री महोदय ने कलात्मक सामग्री और हस्तलिखित ग्रन्थों का दो घंटे तक तन्मयता से अवलोकन किया तथा प्रसन्न होकर इस कार्य को जारी रखने के लिए कहा, साथ ही उपस्थित विद्वत् समाज ने भी प्रसन्नता व्यक्त की। मंत्री महोदय ने दिल्ली जाकर इस विषय में पत्र भी प्रेषित किया। इतना सबकुछ हो जाने के बाद भी मेरे मन को भय सता रहा था कि आगे इस काम को कैसे जारी रख पाऊँगा, क्योंकि घर की स्थिति बहुत विपन्नतापूर्ण थी और यह काम बहुत ही अर्थसाध्य था। मैंने इस कार्य को करने का मानस तो बना लिया लेकिन मुझ जैसे अर्थसंतप्त व्यक्ति के लिए कार्य को जारी रखना असंभव था। आभूषण बेचकर ग्रन्थ खरीदना, निरन्तर कर्ज में डूबे रहना, आशा-निराशा के साथ गांव-गांव भटकते रहने से मन बहुत खिन्न रहने लगा। लेकिन मन की आन्तरिक शक्ति हठपूर्वक मुझे इस कार्य को जारी रखने के लिए विवश करती थी। 'मैं क्या करूँ, क्या नहीं करूँ' इसी किंकर्त्तव्यविमूढ़ता की स्थिति में एक उत्सव के दौरान मुझे चौमूं के महन्त महाराज श्री रामकिशोर दास जी मिले, जो मेरे प्रारंभिक गुरु भी रहे हैं, मैंने उनको संग्रहालय से सम्बन्धित दुःखद स्थिति से अवगत कराया तो उन्होंने तुरंत ही मनुस्मृति का यह श्लोक सुना दिया -

ब्राह्मणस्य च देहोऽयम् क्षुद्र कामाय नेष्यते।

कृच्छाय तपसे चैव प्रेत्यानन्त सुखाय च।।

अर्थात् यह ब्राह्मण का शरीर छोटे-मोटे काम करने के लिए नहीं मिला है, केवल खा-पीकर जीवन व्यतीत करना इच्छित धर्म नहीं है। यह शरीर कठिन तपस्या के द्वारा श्रेय मार्ग पर चलने के लिए प्राप्त हुआ है। इस तपस्या के उपरांत ही अनन्त सुख की प्राप्ति संभव है।

महन्त जी से अन्य ज्ञानपरक बातें भी हुईं जिनसे मैं बहुत प्रभावित हुआ और मेरा निराशा का भाव तिरोहित हो गया।

ग्रन्थों की प्राप्ति के दौरान मुझे अनेक खट्टे-मीठे ही नहीं बल्कि मर्मान्तक पीड़ा पहुँचाने वाले अनुभव भी प्राप्त हुए जिनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण, रोमांचक एवं ज्ञानवर्धक अनुभवों का यहां उल्लेख कर रहा हूँ जिससे पाठकों को भी यह जानकारी हो कि यह कार्य मेरे लिए कितना कष्टदायी रहा है। कई बार बहुत बड़ी धनराशि के बदले भी ग्रन्थों के स्वामी अपने 'अमूल्य लगने वाले' ग्रन्थ देने को तैयार नहीं होते थे। बात सन् 1960 की है, अलवर जिले के एक छोटे से ढाणीनुमा गांव में विद्वान् महादेव प्रसादजी के यहां 16 से 18वीं शताब्दी तक के ग्रन्थ देखने को मिले। 40-45 बस्तों में बंधे इन महत्त्वपूर्ण वैदिक और ज्योतिष के ग्रन्थों की उपलब्धता मेरे लिए विस्मयकारी थी। महादेव प्रसादजी ने मुझे अपने उत्कृष्ट ग्रन्थ दिखा तो दिये लेकिन मेरे अनुनय-विनय करने और ग्रन्थों के सदुपयोग का आश्वासन देने के बाद भी वे ग्रन्थ देने को तैयार नहीं हुए तो मैं बहुत उदास होकर भारी मन से जयपुर लौट आया।

सुन्दर और सुस्पष्ट लिपि के ग्रन्थों के आकर्षण ने मुझे इस कदर आसक्त कर दिया था कि 15 वर्ष बाद 1975 में एक बार फिर मैं महादेव प्रसादजी के यहां गया, जो अब काफी वृद्ध हो गये थे। मेरे ग्रन्थानुराग को देखकर इस बार वे अपने ग्रन्थ देने को तैयार हो गये। ग्रन्थों के बस्ते करीब 7 फुट लम्बे और 4 फुट ऊंचे लकड़ी के बक्से (मंजूषा) में रखे थे। बक्से से एक-एक करके 6 बस्ते निकालने के बाद जब मैंने सातवां बस्ता उठाया तो फुंफकारता हुआ विशालकाय सर्पराज अपना फन फैलाकर खड़ा हो गया और मेरे हाथ को डस लिया जिससे ग्रन्थों का बस्ता हाथ से छूट गया और मैं भय से कांपते हुए मंजूषा के पास बेहोश होकर गिर गया। तदनन्तर महादेव प्रसादजी ने तेजाजी के घोड़ले (सर्पदंश का इलाज करने वाले) को बुलाया। विष चूसने वाले के इलाज के 2-3 घंटे के बाद जब मुझे पूर्णतया होश आया तो व्यथित होकर मैंने महादेव प्रसादजी से इतना ही कहा कि 'पंडित जी मैं तो ग्रन्थ लेने आया हूँ अपने प्राण देने थोड़े ही आया हूँ।' कई लोगों के प्रयास के बाद जब नागराज खेतों की ओर चले गये तो ज्ञात हुआ कि चूहों ने बक्से को
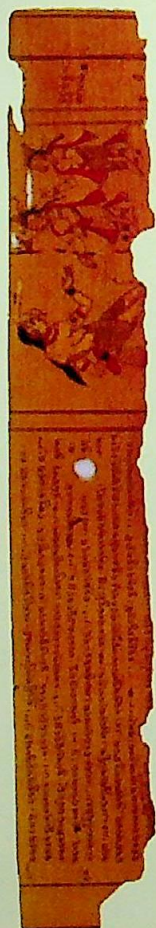
कृष्ण, बलराम और गोपी, 16 वीं श., उड़ीया भाषा में भागवत दशम स्कन्ध,
माप : 23.5, 3.5 से.मी. ताड़पत्र पर सचित्र ग्रंथ

काट रखा था और नागराज मूषक भक्षण के लिए ही यहां विराजमान थे। यह सब देखने के बाद विचार आया कि लक्ष्मी की सुरक्षा के लिए खजाने पर सांप होने की बात तो सुनी थी लेकिन इसका सरस्वती के भण्डार पर बिराजमान होना आश्चर्यजनक था। विचलित करने वाली यह घटना मेरे मानस-पटल पर आज भी अंकित है।

अलवर की वर्ष 1960 की ही एक अन्य घटना भी उल्लेखनीय है। पंडित बदरी नारायणजी के साथ कलात्मक सामग्री और ग्रन्थों के लिए अलवर गया था। वहां दो दिन प्रवास पर कलात्मक सामग्री तो मिली लेकिन प्राचीन ग्रन्थ नहीं मिले। बाजार से गुजरते समय पंडितजी ने गरम कचोरी खाने की इच्छा व्यक्त की। हम नजदीक ही हलवाई की दुकान पर गये और उससे दो कचोरियां देने को कहा। हलवाई ने कागज में लपेट कर दो कचोरियां दी तभी मेरा ध्यान कचोरी से लिपटे कागज पर गया, मैंने देखा कि असल में वह कागज तो हस्तलिखित 'बादरायण सूत्र' का पन्ना था। उसके बाद हमने तुरन्त ही हलवाई से 'बादरायण सूत्र' वाला अपूर्णग्रन्थ तथा ऐसे 3-4 अन्य ग्रन्थ अच्छे पैसे देकर खरीद लिए और उससे पूछा कि रद्दी के रूप में काम में ले रहे ग्रन्थ आपको कहां से प्राप्त हुए। हलवाई ने एक वृद्धा का पता बताया। उस वृद्धा से मिलकर हमने ग्रन्थों के 22 बस्ते उचित कीमत देकर प्राप्त कर लिये। ग्रन्थों की बड़ी अर्थ राशि देखकर वृद्धा अपने स्वर्गवासी पति और उनके पूर्वजों की विद्वता का गुणगान करने लगी। इस ब्राह्मण परिवार में करीब 200-300 वर्ष पहले किसी पाण्डित्यपूर्ण व्यक्ति ने यह संग्रह किया होगा। हमें उसी विद्वान् का पुण्य प्रताप इन दुर्लभ ग्रन्थों के रूप में देखने को मिला।

कुछ समय पश्चात् सन् 1962 में ग्रन्थ संग्रह के दौरान हुए कटु अनुभवों में एक घटना तो हृदय कँपा देने वाली रही। मैं अपने सेवक हनुमान के साथ झालावाड़ से ग्रन्थ खरीद कर लौट रहा था। रात्रि में बियावान जंगल से गुजर रहे थे तभी अचानक हमारी गाड़ी का टायर पंचर हो गया। गाड़ी को सड़क के किनारे लगा कर मैं गाड़ी से नीचे उतरा और टायर को बदलने से पहले लघुशंका के लिए थोड़ी ही दूर गया था कि अचानक हनुमान की घबराई हुई सी आवाज आई -

'बाबूजी बिना आगे-पीछे देखे तुरंत गाड़ी में बैठिए ।' गाड़ी में बैठने के लिए मैं मुड़ा तो एक विशाल व्याघ्र (बघेरे) ने मेरे पैर पर झपट्टा मारा लेकिन मेरा पैर उसकी पकड़ में आने से बाल-बाल बच गया । इसी आपाधापी में मेरी धोती फट गई और पैर पर व्याघ्र के पंजों से खरोचें आ गई । उस नृसिंह भगवान (व्याघ्र) को देखकर मेरे हाथ-पांव फूल गये लेकिन मैं कांपते हुए जैसे-तैसे गाड़ी में बैठा और जोर-जोर से गाड़ी का हॉर्न बजाने लगा । सर्दी का मौसम था कुछ देर बाद ईश्वर की कृपा से व्याघ्र बीहड़ में अदृश्य हो गया । उसके जाने के दो-तीन घंटे बाद भोर होने पर हम गाड़ी से निकले और टायर बदल कर तुरंत रवाना हुए । उस दिन मैंने संकल्प लिया कि कभी भी गाड़ी के लिए रिट्रेटेड टायर काम में नहीं लूँगा ।

ग्रन्थ संग्रह का एक कटु लेकिन स्मरणीय अनुभव वर्ष 1970 का है जब मैं ग्वालियर और लश्कर में राज वैद्य और राजगुरु के घर से ग्रन्थ प्राप्त कर दतिया महाराज के यहां आया जिन्होंने ब्राह्मण तथा ग्रन्थानुरागी जानकर मेरा राजोचित सम्मान किया और चार दिन तक अपने महल में रखा । एक दिन महाराजा के विशिष्ट व्यक्ति ने मुझे सिंध नदी के तट पर बना हुआ दतिया महाराज का ही पुराना महल भी दिखाया । यह भी दिखाया कि नदी में गोबर डाल कर कैसे मगरमच्छ का शिकार किया जाता है । दतिया नरेश शतरंज के शौकीन थे । उनके साथ 4-5 घंटे तो शतरंज खेलने में ही बीत जाते थे । उनके आतिथ्य सत्कार के दौरान दस्यु सरदार मोहर सिंह के किस्से भी सुनने को मिलते थे । पांचवें दिन महाराज से विदाई लेते समय डाकू मोहरसिंह के आतंक की आंशका से अवगत कराया तो कामदार ने कहा कि यदि आपको दस्यु सरदार मिल भी जाये तो आप कह देना कि हम महाराज साहब के अतिथि हैं, फिर वह आपको कुछ नहीं कहेगा । सुरक्षा के आश्वासन के बाद महाराज साहब से विदा लेकर रवाना होने के 2-3 घंटे चलने के बाद जब जंगल पार होने में थोड़ा ही रास्ता बाकी था तो देखा कि मार्ग में बाधा के लिए किसी ने बड़े-बड़े पत्थरों की कतार बना रखी थी, हमने जैसे ही गाड़ी को रोका, तभी कुछ बन्दूकधारी गाड़ी के सामने आ गये और हमें गाड़ी से बाहर आने को कहा । एक बार तो मैं घबराया फिर थोड़ी हिम्मत करके गाड़ी से उतर ही रहा था कि एक
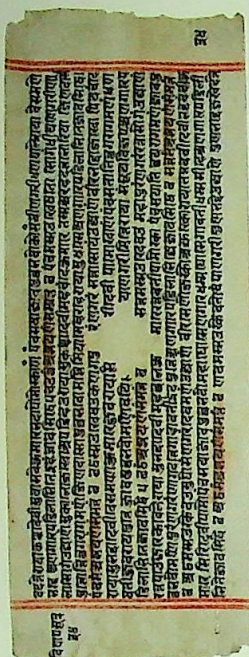
लोह निर्मित ताडपत्र पर
लेखन के दो उपकरण
दक्षिण भारत, 17वीं श.

दस्यु ने मुझे जोर से गाड़ी से बाहर खींच लिया और मार्ग में पड़े हुए पत्थरों के अवरोधकों को हटा दिया। अब सभी हट्टे-कट्टे मुसटंडे बन्दूकधारी गाड़ी सहित जंगल में अपने सरदार के पास ले गये जहां बड़ी-बड़ी मूंछोंवाला एक व्यक्ति पेड़ के नीचे चार-पांच बन्दूकधारियों के साथ बैठा था। असल में वही सरदार मोहरसिंह था। उसने मुझसे पूछा कि गाड़ी में माल भरकर कहां ले जा रहे हो? उसके रौद्र रूप से मैं डर के मारे कांपने लगा और कांपते हाथों से यज्ञोपवीत (जनेऊ) निकाल कर कहा कि 'मैं तो एक साधारण ब्राह्मण हूँ कोई बड़ा व्यापारी नहीं हूँ।' एक बन्दूकधारी गाड़ी की डिग्गी में से ग्रन्थों की बोरी ले आया। मैंने बोरी में से ग्रन्थ निकाल कर उन्हें दिखाए और कहा कि आप चाहें तो इनको रख सकते हैं। साथ ही यह भी बता दिया कि मैं दतिया महाराज के यहां से आ रहा हूँ और जयपुर का रहनेवाला हूँ। दस्यु सरदार समझ गया कि खबरी से मिली सोना-चाँदी व जेवरात की सूचना गलत थी, उन्होंने अपने सेवकों से कहा कि इन्हें जहां से लाये हों यथास्थान सुरक्षित पहुँचा कर आओ। इस प्रकार मैं ईश्वर की कृपा से सकुशल जयपुर आ गया।

वर्ष 1958 में मुझे 17वीं शताब्दी का तीन टीकाओं वाला ग्रन्थ 'नैषध काव्य' का पूर्व भाग उज्जैन (मध्यप्रदेश) में मिला, इस पूर्व भाग की टीका श्री चारित्र मुनि द्वारा की गई है और बहुत आश्चर्य की बात है कि इस ग्रन्थ का उत्तर भाग मुझे सत्रह साल बाद 1975 में ब्यावर (राजस्थान) में मिला। ग्रन्थ के उत्तर भाग के टीकाकार नरहरि कृत गदाधारी टीका तथा विद्यारण्य कृत दीपिका टीका से युक्त है। जब मैंने इस सुन्दर-सुस्पष्ट लिपि वाले उच्च कोटि के प्राचीन ग्रन्थ को देखा तो इसकी लिपि मेरी आँखों में बस गई और ग्रन्थ को देखते ही पहचान गया कि यह 'नैषध काव्य' का ही शेष भाग है। आगे फिर कभी ऐसा अविश्वसनीय उदाहरण देखने को नहीं मिला।

ग्रन्थ संग्रह के दौरान घटी एक अविस्मरणीय घटना और याद आ गई। घटना सन् 1960 के आसपास की है जब मैं ग्रन्थों के साथ-साथ नदी में डूबते-डूबते बचा। मैं कोटा से प्राचीन ग्रन्थ लेकर लौट रहा था, कोटा और बूंदी के बीच रास्ते में घोड़ा पछाड़ नदी पड़ती थी

जो उन दिनों बड़े वेग से बह रही थी । मेरे पास ग्रन्थों के दो बस्ते थे । मुझे नदी के मार्ग को पार करके दूसरे गांव के लिए जाना था इसलिए मैंने अपने ग्रन्थों के बस्ते को कंधे पर रख लिये । नदी में थोड़ा चलने पर अचानक नदी की सतह पर बने हुए गड्ढ़े में मेरा पैर फिसल गया और मेरा संतुलन बिगड़ गया जिससे ग्रन्थों के बस्ते स्वतः नदी में ही छूट गये और मैं नदी के प्रवाह में बहने लगा तभी नदी के किनारे भेड़-बकरी चराने वाला मुझे डूबते देख मेरी ओर दौड़ा और थोड़ा नदी के अन्दर आकर अपनी लकड़ी मेरी ओर कर दी, मैं उस लकड़ी को पकड़ कर नदी से बाहर आ गया । इस प्रकार ईश्वर की कृपा और चरवाहे की सहायता से मैं इस विपत्ति से सकुशल बाहर निकल पाया ।

सन् 1976 में कोटा-झालावाड़ होते हुए ग्रन्थ प्राप्ति के लिए भैंसगढ़ रोड पहुँचा जहां पहाड़ पर ही बस्ती पर बसी हुई थी । यहां हस्तलिखित ग्रन्थों के स्वामी (60-70 वर्षीय पंडितजी) को अपने आगमन के उद्देश्य से अवगत कराते हुए अनुरोध किया कि आपके पास जो हस्तलिखित ग्रन्थ हैं वह उचित अर्थराशि लेकर देने की कृपा करें । लेकिन वे ग्रन्थ विक्रय के नाम पर बिगड़ कर कहने लगे कि हमारे पूर्वजों ने काशी में विद्या अध्ययन करके ग्रन्थों की जो रचना की है वो बेचने की चीज नहीं है । मैंने उन्हें बड़ी विनम्रता से कहा कि मैं भी गाय को पालने के लिए ले जा रहा हूँ कोई कसाई को देने के लिए नहीं ले जा रहा । साथ ही यह भी कहा कि मैं इन्हें देश-विदेश में बेचने के लिए नहीं ले जा रहा । पंडितजी ने लम्बा-चौड़ा भाषण देते हुए अपने पूर्वजों के ग्रन्थों का वैज्ञानिक महत्त्व बताते हुए कहा कि ''म्हाकां पुरखां का लिख्योड़ा ग्रन्थां न पढ़-पढ़कर तो जर्मनी हाळा हवाई जहाज बणा लिया । यां ग्रन्थां की कीमत दुनिया में कुण दे सके छै !'' (हमारे पूर्वजों के लिखे ग्रन्थों को पढ़कर तो जर्मनी वालों ने हवाई जहाज बना लिया, इन ग्रन्थों की कीमत कोई नहीं दे सकता ।) इतना कहते हुए उन्होंने अपना अंतिम फैसला सुना दिया कि वे किसी भी कीमत पर ग्रन्थ नहीं देंगे । इनके संग्रह में करीब 60 बड़े बस्तों में उत्तम कोटि के ग्रन्थ थे, लेकिन यहां से मुझे ग्रन्थ नहीं निराशा ही हाथ लगी ।

करीब 20 वर्ष बाद अनायास ही उन ग्रन्थों का स्मरण हुआ तो
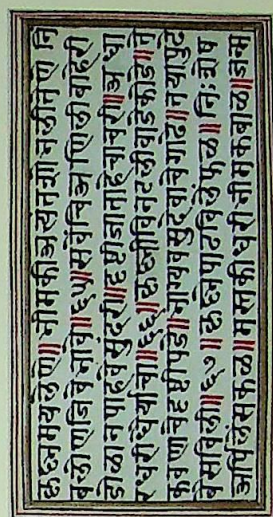
1996 में दलाल पूरणचन्द जी बेगड़ी के साथ मैं दुबारा भैंसगढ़ रोड गया। वहां जाने पर ज्ञात हुआ कि पंडित जी तो वर्ष 1980 में ही स्वर्ग सिधार गये। उनकी धर्मपत्नी से बात करने पर उन्होंने कहा कि आप तो पहले भी पंडितजी को ग्रन्थों की अच्छी कीमत दे रहे थे मगर ग्रन्थों के मोहवश वे ही तैयार नहीं हुए। पंडिताणीजी की सहमति पर हमने उनकी टांण से बस्ते उतरवाये जो कुल 15 ही थे। मैंने उनसे पूछा कि बाकी के 40-45 बस्ते कहां हैं? उन्होंने बड़े धीरज के साथ कहा कि पंडित जी के श्राद्ध पर वह हर साल दो बस्ते मंगला और चम्बल नदी के संगम-स्थल पर 50-60 फुट ऊपर से ही फेंकते हुए कहती है कि 'ल्यो संभाळो थांकी पोथ्यां नै' (लो संभालो अपने ग्रन्थों को)। इस प्रकार पंडिताणीजी ग्रन्थों को नदी में विसर्जित करके पंडितजी को श्रद्धांजलि देती रही थीं। शेष बचे 15 बस्ते मैंने उचित धनराशि देकर प्राप्त किये और पंडिताणीजी का अमूल्य आशीर्वाद भी प्राप्त किया।

हस्तलिखित दुर्लभ ग्रन्थों के प्रति अनुराग और प्रेम के चलते मैंने ग्रन्थ संग्रह के लिए समय, श्रम और धन के साथ-साथ अपने प्राण तक जोखिम में डाल दिए, जिससे दुर्लभ ग्रन्थ अमूल्य हो गये हैं। ऐसे अमूल्य एवं समृद्ध संग्रह को सहेज कर संरक्षित एवं सुरक्षित रखने का काम आज भी जारी है। एक लाख से भी अधिक हस्तलिखित ग्रन्थों, ताड़पत्र ग्रन्थों, भूर्जपत्र ग्रन्थों के साथ ही हजारों दुर्लभ कलाकृतियों, चित्रकृतियों के इस अद्‌भुत भंडार के सम्बन्ध में यह उल्लेख करते हुए मुझे ईश्वर की कृपा की ही अनुभूति हो रही है कि संजय शर्मा संग्रहालय बिना किसी के आर्थिक सहयोग के अपने स्वअर्जित धन से निर्मित किया गया है। दुर्लभ पांडुलिपियों और पुरा महत्त्व की सामग्री से युक्त यह संग्रहालय एकमात्र ईश्वर की कृपा का ही फल है। यह सारी चमक-दमक सर्व शक्तिमान परमात्मा की ही है। अपने स्वकथ्य को 'प्रांजलि' की एक कविता की निम्न पंक्तियों से विराम देना उचित होगा -

अस्तगामी दिवस मैं;
मधु सान्ध्य घन मेरा बसेरा।
क्या कहूँ उत्सुक जगत को ?
सूक्ष्म है इतिहास मेरा,
धूल उज्ज्वल सार भर कर
बन गई क्षण में स्यमन्तक !

रामकृपालु शर्मा
संस्थापक,
श्री संजय शर्मा संग्रहालय

जगन्नाथ जी की शीतकालीन झाँकी, उड़ीसा शैली, 18वीं श., 64 x 76 से.मी., कपड़े पर चन्द्ररस का काम

संग्रहालय – एक दृष्टि

इतिहास, पुरातत्त्व, अप्रतिम कला और सांस्कृतिक सम्पदा से समृद्ध राजस्थान विविधता में एकता का ऐसा जीता–जागता प्रतिमान है जो अपनी शौर्य गाथाओं, पराक्रम कथाओं और लोकधर्मी कलाओं की विराट विरासत के साथ–साथ सदियों से भारतभूमि को अपना सर्वस्व समर्पित करता रहा है। राजस्थान भ्रमण के लिए आने वाले सैलानी पर्यटन की दृष्टि से विश्व में अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाले जयपुर के दर्शनीय स्थलों का अवलोकन करने का लोभ संवरण नहीं कर पाते। प्राच्य विद्या, कला एवं संस्कृति के संग्रहालयों के लिए भी राजस्थान की राजधानी जयपुर महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। कला एवं संस्कृति के ऐसे ही समृद्ध संग्रहालयों में से एक है **श्री संजय शर्मा संग्रहालय एवं शोध संस्थान।**

- सन् 1954 से पाण्डुलिपियों का संकलन शर्मा ग्रन्थ संग्रहालय के रूप में श्रीगणेश हुआ जिसका 1970 में केन्द्रीय शिक्षा राज्य मंत्री भक्त दर्शनजी द्वारा उद्घाटन किया गया। तत्पश्चात् संग्रहालय हेतु भवन निर्माण होने पर केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री डॉ. श्री मुरली मनोहर जोशी द्वारा सन् 1999 में उद्घाटन सम्पन्न हुआ। संग्रहालय भवन गली में होने पर राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल जी शर्मा एवं माननीय प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी जी वाजपेयी

भागवत की सचित्र पाण्डुलिपि (लिपि देवनागरी व भाषा संस्कृत) गुजरात शैली, 14वीं श., 30 x 12 से.मी., कागज पर प्राकृतिक जल रंगों से निर्मित

एवं भारत के उपराष्ट्रपति श्री भैरोंसिंह जी शेखावत ने बाहरी स्थान पर संग्रहालय निर्माण के लिए सुझाव दिया। तद्नुसार सरकार द्वारा रियायती दर पर जमीन प्राप्त होने पर विशाल भवन का निर्माण स्व अर्जित धन से ही सम्भव हो सका। 55 वर्ष की इस साधना के स्वरूप 15 दिसम्बर, 2013 में सुप्रीम कोर्ट की न्यायाधिपति श्रीमती ज्ञान सुधा मिश्र एवं त्रिवेणी धाम के सन्त नारायण दास जी द्वारा लोकार्पण सम्पन्न हुआ।

- मैंने और मेरी धर्मपत्नी ने तथा मेरे परिवार ने अपनी स्वोपार्जित धन से खरीदी हुई प्राचीन कला कृतियों एवं पाण्डुलिपियों के निजी संग्रह को मेरे कनिष्ठ पुत्र स्व. संजय शर्मा की स्मृति में एक संस्था के रूप में प्रदर्शन की व्यवस्था की गई है।
- यह भारतीय साहित्य, संस्कृति और कला वस्तुओं का अद्भुत एवं अद्वितीय संग्रहालय है जिसे ऋषिकल्प श्री रामकृपालु शर्मा ने अपनी अर्द्ध शताब्दी की एकनिष्ठ साधना, समर्पण और श्रद्धा से निर्मित किया है। यह संस्थान साहित्य की गंगा, संस्कृति की यमुना और कला की सरस्वती के लिए त्रिवेणीधाम है।
- यहां वेद विद्या, रसायन, ज्योतिष, तंत्र-मंत्र, आयुर्वेद, धनुर्वेद, चिकित्सा, तांत्रिक साधना एवं अवतार कथा से सम्बन्धित दुर्लभ प्रामाणिक और प्रायोगिक ज्ञान का प्रामाणिक संग्रह है।
- यहां भवन निर्माण, मंदिर निर्माण, ग्रह नक्षत्र, तारक मण्डल, पंचांग निर्माण से सम्बन्धित असंख्य चित्रों, यंत्र-मंत्र-तंत्र के विलक्षण रेखाचित्रों, विभिन्न शैलियों के चित्रों, कलाकृतियों और मानचित्रों का विशाल संग्रह है।
- यहां का संग्रह काष्ठ कला, शिल्प कला, मृतिका पात्रों, कलम-दवात, लेखन सामग्रियों, शस्त्रास्त्र, पारद कृतियों, रत्नमय गणेश प्रतिमाओं, विभिन्न धातुओं से विनिर्मित चरण पादुकाओं, शताब्दियों पुराने दीपकों, दीपाधारों, वेदों और वैदिक देव स्वरूपों की चित्रकृतियों से अलंकृत है।

संग्रहालय की कलाकृतियों का संक्षिप्त विवरण

- यहां विभिन्न सम्प्रदायों, पंथों, महाराजाओं, बादशाहों, श्रेष्ठियों द्वारा पहनी जाने वाली चरण पादुकाओं के साथ ही पूजा में रखी जाने वाली, प्रायश्चित के लिए स्वयं को दण्डित करने वाली पादुका, चाँदी, सीप, तारकशी, पच्चीकारी, हाथी दाँत, लोह धातु तथा काष्ठ कला की विविध प्रकार की पादुकायें भी संग्रहालय की शोभा बढ़ा रही हैं।

चरण पादुका – मुगल शैली, 18वीं श., 24X10 से.मी., काष्ठ पर हाथी दांत और सीप से निर्मित

चरण पादुका – राजस्थान शैली, 18वीं श., 27 X 9.5 से.मी., काष्ठ पर चांदी की पच्चीकारी का काम

- संग्रह में शताब्दियों तक जलते रहे दीप जैसे – गरुड़ दीप, राजलक्ष्मी दीप, वानराकृति दीप, शुकाकृति दीप और वायुदाब पर संचालित होने वाले दीप सुसज्जित हैं। इस अद्‌भुत और प्रामाणिक संग्रहालय में 14वीं शताब्दी से लेकर 20वीं शताब्दी तक के दीपक उपलब्ध हैं। राजभवनों, रनिवासों, अन्तःपुरों और श्रेष्ठियों की पत्नियों द्वारा आमोद–प्रमोद के साधनों के रूप में प्रयुक्त विविध प्रकार की चौपड़, शतरंज, गंजीफा, दस कौड़ा, सर्प सीढ़ी आदि खेल सामग्री भी विद्यमान है।

सुनहरी स्टैण्ड वाला कटग्लास लैम्प, यूरोप शैली, 19वीं श., 47 X 18.5 से.मी., सोने का काम

विभिन्न प्रकार के दीपक एवं दीपाधार (14वीं श. - 20वीं श.) देश के विभिन्न स्थानों पर निर्मित

- यहां विविध प्रकार के शस्त्रास्त्र जिनमें धनुष-बाण, तरकश, और दिव्यास्त्रों का नायाब संग्रह है।
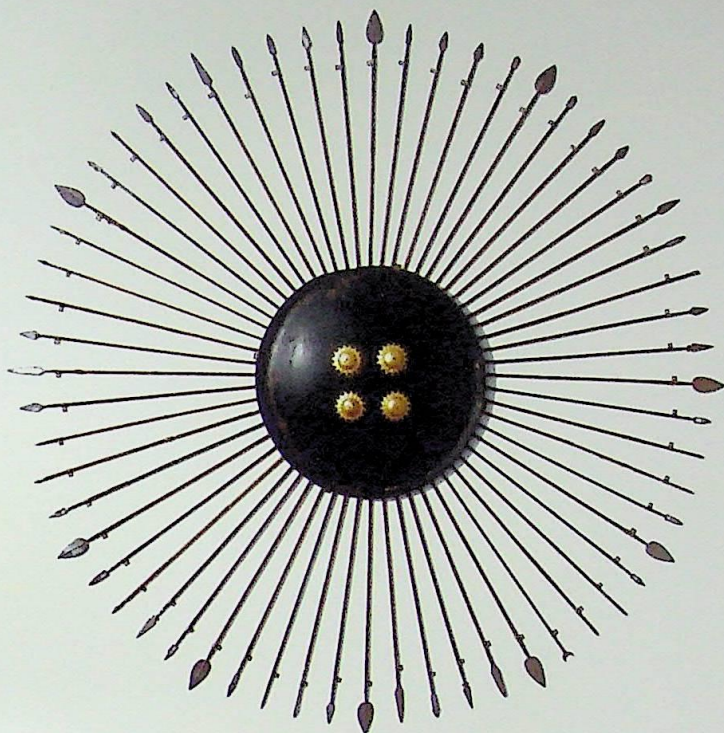
ढाल – राजस्थान शैली, 19वीं श., 51 x 51 से.मी., गेंडे की खाल से निर्मित ढाल इसके अतिरिक्त फौलाद, बांस, हाथी दांत से निर्मित (विभिन्न प्रयोगों में काम आने वाले 60 तीर, 19वीं श. 67 x 2 से.मी.)
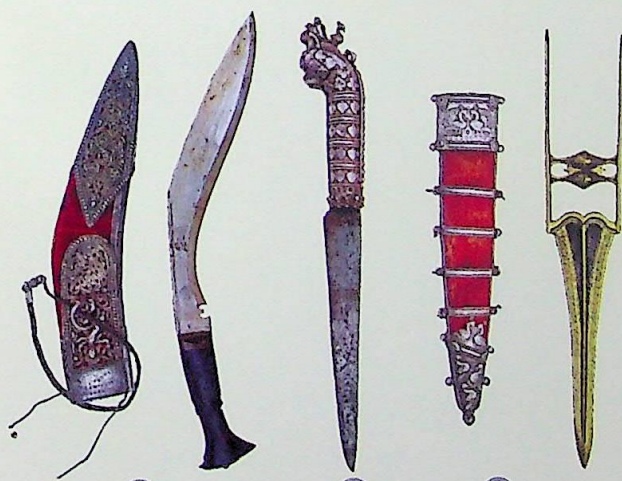
1. खुकरी – नेपाली छुरी म्यान सहित, 18वीं श., 34 x 7 से.मी., चाँदी की सिंहवाहिनी, कलात्मक फौलाद से निर्मित
2. कटार म्यान सहित नेपाल, 18वीं श., 33 x 5 से.मी., फौलाद से निर्मित, चाँदी के काम की शेर की आकृति
3. कटार, अलवर शैली, 18वीं श., 39.5 x 7 से.मी.

- राजभवनों, रनिवासों, अन्तःपुरों और श्रेष्ठियों की पत्नियों द्वारा आमोद–प्रमोद के साधनों के रूप में प्रयुक्त विविध प्रकार की चौपड़, शतरंज, गंजीफा, दसकौड़ा, सर्पसीढ़ी आदि खेल सामग्री भी विद्यमान है।

- संग्रहालय में 300 वर्ष प्राचीन चित्रावली एवं खेल प्रदर्शित किये गये हैं। इनमें इन्डोर एवं आउटडोर खेलों के अनेक स्वरूप विद्यमान हैं। चित्रावली से बच्चों के मनोरंजन के साथ–साथ ज्ञान–विज्ञान की जानकारी भी मिलती है जो बुद्धि के विकास में भी सहायक है। यहां हर आयु वर्ग के बच्चों के लिए वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक खेल भी प्रदर्शित किये गये हैं जिनसे बच्चे मनोविज्ञान को सहजता से समझ सकते हैं। प्रदर्शित चित्र प्रकृति की विभिन्न अवस्थाओं, नर–नारी, पशु–पक्षी, देवी–देवता के रूप में हैं। नकारात्मक ऊर्जा की पहचान के लिए कई वीभत्स चित्र उपलब्ध हैं जो खेल पहेलियों, द्विआयामी एवं त्रिआयामी चित्रों के रूप में हैं।

गंजीफा बॉक्स - रामपुर स्टेट, 18वीं श., 29X12 से.मी., लकड़ी पर चपड़ी चन्द्ररस का काम

विभिन्न प्रकार एवं आकार के गंजीफे

फ्रेंच बाजा - (पौलीफोन म्यूजिकल बॉक्स) 12 रिकार्डर के साथ, फ्रांस, ईस्ट इंडिया कम्पनी काल, 51X48X23 से.मी., लकड़ी एवं लोहे से निर्मित

बुद्धि विकासात्मक चित्रावली - अक्कल-चरख के चित्र 2 घोड़े से चार थोड़े बनते हैं - दो दौड़ते हुए और दो पड़े हुए), जयपुर शैली, 19वीं स., 14 x 20 से.मी., कागज पर जल रंगों से निर्मित

जुआ में हार-जीत का परिणाम लेख सहित, बीकानेर शैली 1825ई., 28 x 23.5 से.मी., कागज पर प्राकृतिक जल रंगों से निर्मित, चित्रकार - ऋषिलाल चन्द

बच्चों का कलात्मक गुल्लक, इंग्लैण्ड, 18वीं श., 20 x 15.5 से.मी., लोहे से निर्मित

प्राचीन क्रीड़ा का साधन सर्प सीढ़ी का खेल, ब्रह्मा, विष्णु, महेश के चित्रों सहित, मारवाड़ शैली 19वीं श., 77 x 72 से.मी., सूती कपड़े पर प्राकृतिक रंगों से निर्मित

चित्र प्रभाग

- संग्रहालय में ग्लास पेंटिंग्स के रूप में चीन, डच, फ्रान्स शैली तथा देश की महाराष्ट्र, तंजौर, मैसूर, बंगाल, बुन्देलखण्ड, उज्जैन, मालवा, अवध, शेखावाटी आदि शैली के चित्र तथा ईस्ट इण्डिया कम्पनी काल की पटना शैली की अभ्रक चित्रावली आदि के साथ 15 शैलियों और ऐतिहासिक विषयों से सम्बन्धित सैकड़ों चित्रकृतियाँ उपलब्ध हैं।
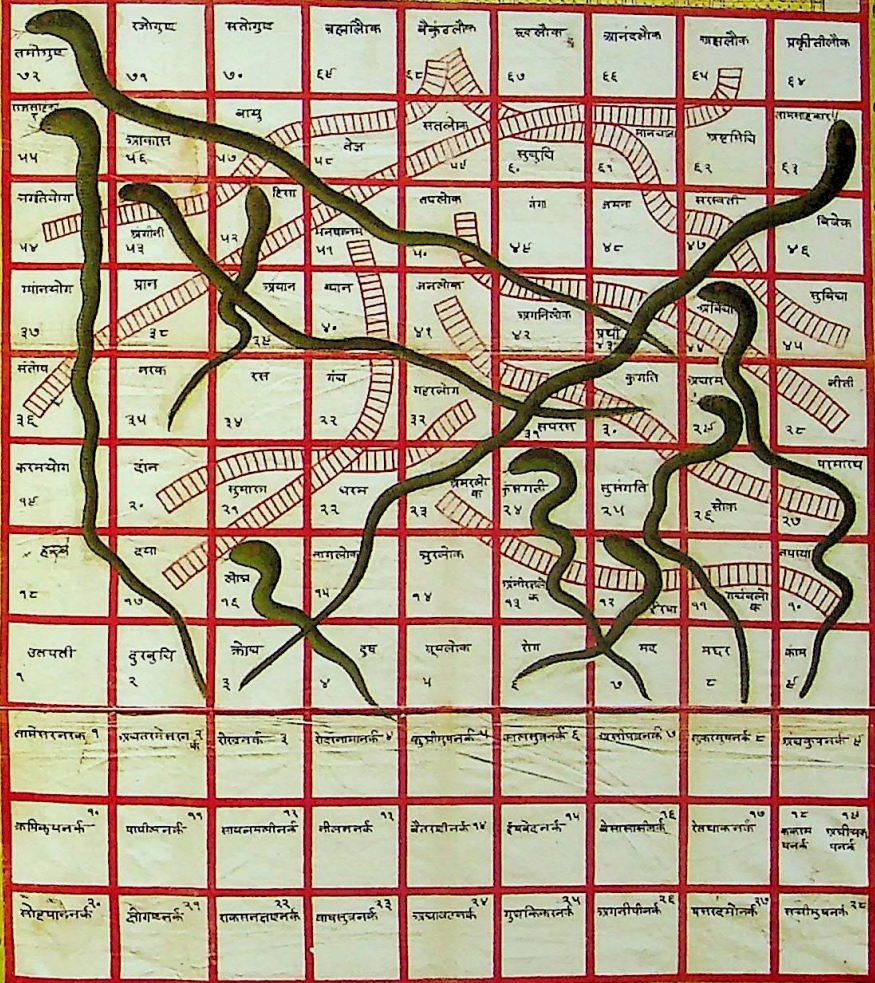
महारानी लक्ष्मी बाई, झांसी, मैसूर शैली, 19वीं श., 39 x 29 से.मी., कांच पर प्राकृतिक जल रंगों से निर्मित
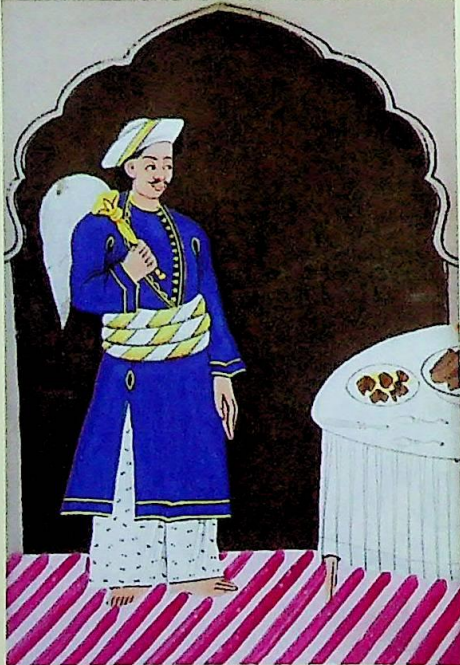
चंवर सेवक, पटना शैली, 19वीं श., 13 x 9.3 से.मी., अभ्रक पर बना चित्र

नन्द एवं यशोदा के साथ बाल रूप में श्रीकृष्ण, तंजावुर शैली, 1850 ई. सन्, 69 x 53.5 से.मी., कांच पर प्राकृतिक रंगों से निर्मित ग्लास पेंटिंग

- संग्रहालय में 15वीं शताब्दी से लेकर अद्यतन चित्रकला का इतिहास जीवन्त हो उठा है। जयपुर, जोधपुर, मेवाड़, बूंदी, कोटा, सिरोही, झालावाड़, किशनगढ़, नाथद्वारा, तंजौर, हैदराबाद, मैसूर, गुजरात, मुगल, पहाड़ी, इस्लामी, उड़िया, पंजाबी और बंगला शैली के चित्रों का यहां भरपूर प्रतिनिधित्व हुआ है।

- श्रीमद्भागवत के कथानायक भगवान श्रीकृष्ण और उनकी लीलाओं के महाराष्ट्र शैली के चित्र तथा श्रीनाथजी के विविध स्वरूपों की मनोहारी झांकियों की चित्र शृंखला भी यहां उपलब्ध है।

अंगडाई लेती नायिका – कोटा शैली, 19वीं श., 29 X 19 से.मी., कागज पर प्राकृतिक जल रंगों से निर्मित चित्र

- सर्वोपयोगी 18वीं शती की योग चित्रावली, तांत्रिक चित्रावली, जैन चित्रावली, विभिन्न शैलियों की पिछवाइयां, राजा-महाराजाओं के चित्र तथा लोक कला से सम्बन्धित सहस्राधिक चित्रों का संग्रह इस संग्रहालय की अमूल्य निधि है।

- संग्रहालय में अनेक सुप्रसिद्ध चित्रकारों के हस्ताक्षरित चित्र भी विद्यमान हैं। इनमें उल्लेखनीय चित्रकार हैं - बगेरा (अजमेर) के कालूराम साध, झालावाड़ के काशीराम दादूजी के शिष्य जयतराम, बीकानेर के मुरादबक्श और गज चितेरा - नाथू चितेरा, जयपुर निवासी सालिगराम, गणेश मुसब्बर, रामप्रताप, रामचन्द्र, छाजू चितेरा, चन्द्र चितेरा, यजेन्द्र शर्मा, जोधपुर के दाना भाटी, आसीन्द देवगढ़ निवासी सांवलदान, बुन्देलखण्ड निवासी मुरलीधर बक्शी, उदयपुर निवासी साहिबदीन, सांवर निवासी गंभर आदि।

हाथी पर सवार राजा प्रेयसी का हरण करते हुए। अलवर शैली, 18वीं श. प्राकृतिक जल रंगों से निर्मित (23 x 19.5 से.मी.)
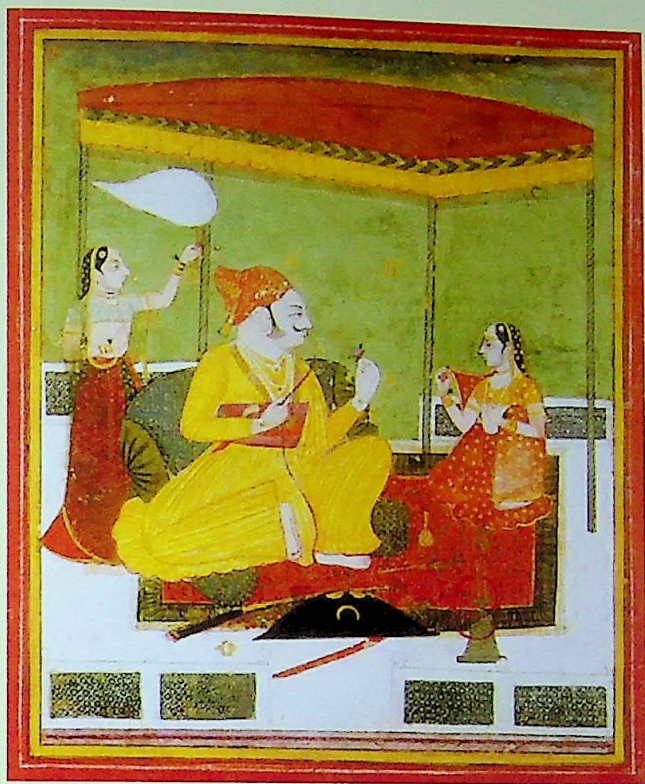
बूंदी के महाराज – अजीत सिंह जी, पटरानी और परिचारिका के साथ। बून्दी शैली, 1771ई. सन्, 30 x 24.5 से.मी. कागज पर प्राकृतिक जल रंगों से निर्मित

वीणा वादन करती नीयिका, मालवा शैली, 17वीं श.,
18.8 x 11 से.मी., कागज पर प्राकृतिक जल रंगों से निर्मित

राजा-रानी एवं स्थानकवासी मुनि श्रावक-श्राविका, बगेरा सावर शैली (जिला अजमेर) सं.1833, ई.सन् 1776, 11.40 x 26.5 से.मी., चित्रकार - कालूराम साध , कागज पर प्राकृतिक जल रंगों से निर्मित चित्र

श्रेणिक राजा एवं चेलणारानी, कोटा शैली, बगेरा (अजमेर), 1925 ई., 25.3 x 23.5 से.मी., चित्रकार - कालूराम साध, कागज पर प्राकृतिक जल रंगों से निर्मित चित्र

कोटा के महाराजा रामसिंहजी
– कोटा शैली, 19वीं श.,
28 x 23.2 से.मी.,
कागज पर प्राकृतिक
जल रंगों से निर्मित चित्र

सुसज्जित नायिका – अलवर शैली,
1810 ई.सन्, 25.5 x 20.3 से.मी.,
कागज पर प्राकृतिक जल रंगों से निर्मित
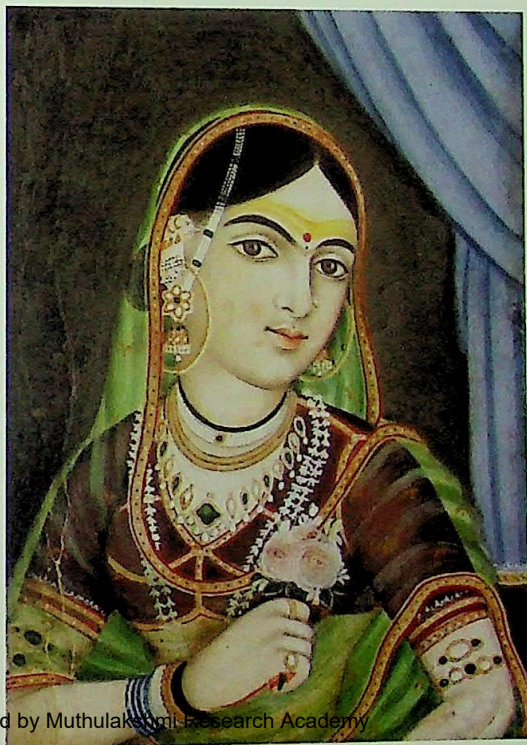
राधा कृष्ण नृत्य मुद्रा में, करौली शैली, 19वीं श., 55 x 38 से.मी.,
कागज पर कटवर्क का काम, कलाकार – चौथीलाल
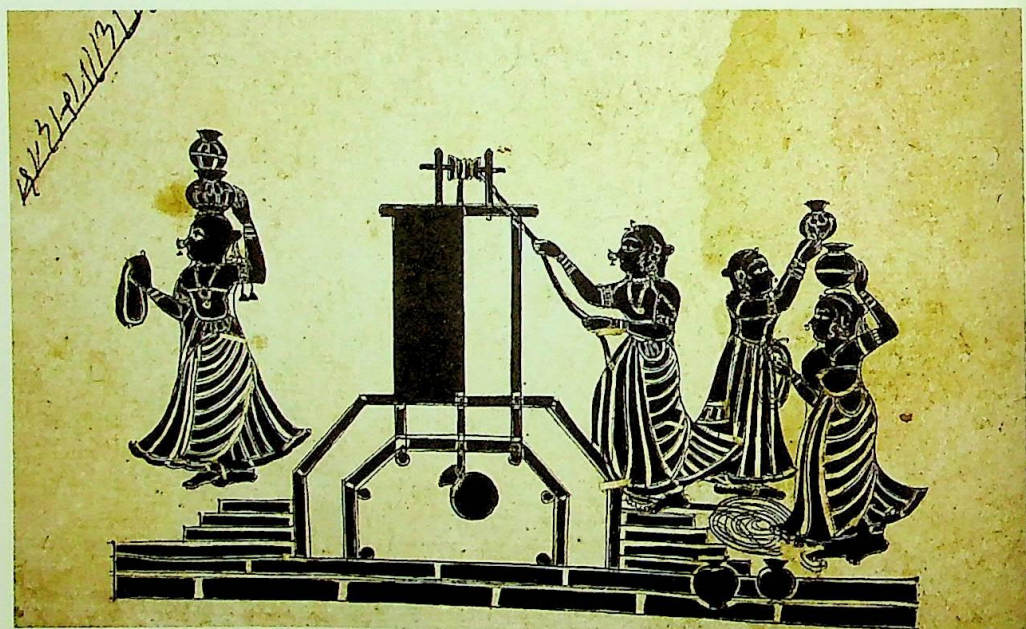
कुएं से पानी निकालती गोपी एवं तीन सखियाँ, करौली शैली, 19वीं श., 26.5 x 26.5 से.मी.,
कागज पर कटवर्क का काम, कलाकार – चौथीलाल

दान लीला – (गोपियों से दूध, दही और मक्खन की मांग करते श्री कृष्ण व उनके सखा)
नाथद्वारा शैली, 19वीं श., 207 ु 175 से.मी., कपड़े पर प्राकृतिक जल रंगों से निर्मित पिछवाई

वस्त्र विभाग

- संग्रहालय की कलादीर्घा शताब्दियों का वैविध्यपूर्ण इतिहास समेटे वस्त्रों की अनूठी दुनिया के सैकड़ों नमूनों से सुसज्जित है। मध्यकाल में प्रयुक्त विभिन्न प्रकार की बिछायतें, गोटा, बन्धेज और जरी के काम के कपड़े, मैनचेस्टर में सांगानेरी डिजाइन की छींटें, मछलीपट्टम् की कलमकारी, कश्मीरी कशीदाकारी के अतिरिक्त शेखावाटी, मुगल, बनारस, मेवाड़ शैलियों के अलंकृत वस्त्र भी यहां संरक्षित हैं। 15वीं से 20वीं शताब्दी तक के राजस्थानी और गुजराती छपाई के नायाब नमूने भी संग्रहालय की शोभा बढ़ा रहे हैं।

- यहां विश्वविख्यात सांगानेरी कलमकारी का दशावतार का आलंकारिक तोरणद्वार है जिस पर 18वीं शताब्दी की उत्कृष्ट कलमकारी देखते ही बनती है।

महाराजा माधोसिंह जी का अंगरखा, अवध शैली, 1880-1922 ई.सन्

203 x 142 से.मी., सिल्क पर जरी का कलात्मक काम
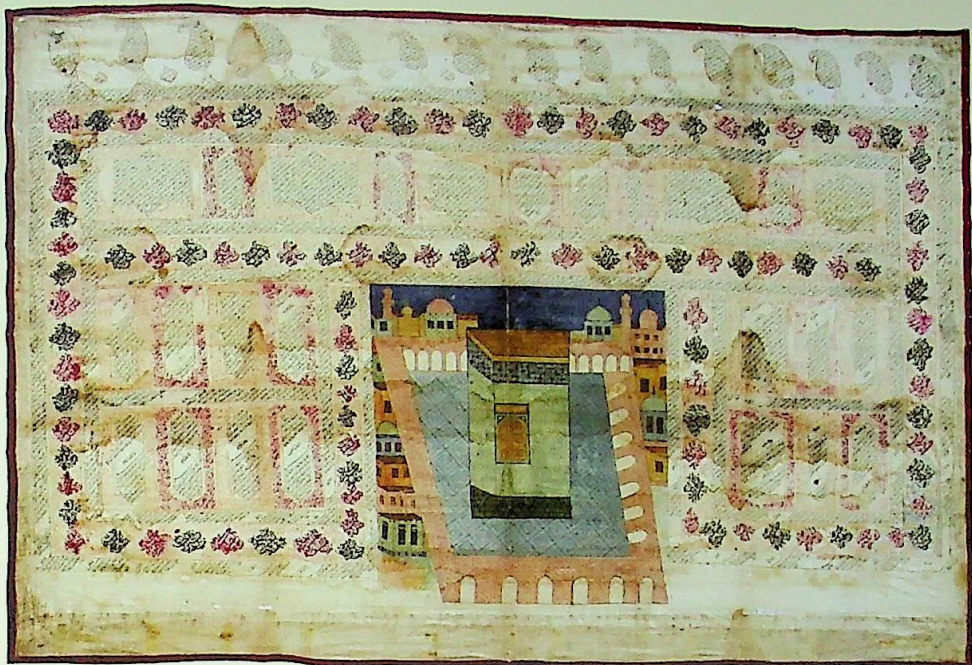
कुरआन शरीफ की कलात्मक आयतें काबा शरीफ के चित्र के साथ, अवध शैली, 19वीं श., 130 x 184 से.मी., सूती कपड़े पर प्राकृतिक जल रंगों से निर्मित

कलमकारी की जानमाज़ (नमाज़ पढ़ने के दो आसन) 18वीं श., मछलीपट्टम, 19 x 130 से.मी.

सिल्क के धागों से बना कालीन (कलाबत्तू), बनारस शैली, 18 वीं श., 75 X 223 से.मी.,
मखमल पर जरदोजी (सोने और चाँदी) का काम

कशीदाकारी का थाल पोश, दस घुड़सवार और मध्य में घोड़े पर सवार रानी, गुजरात शैली,
19वीं श., 73 X 73 से.मी., रेशमी कपड़े पर प्राकृतिक [illegible] रंगों से निर्मित
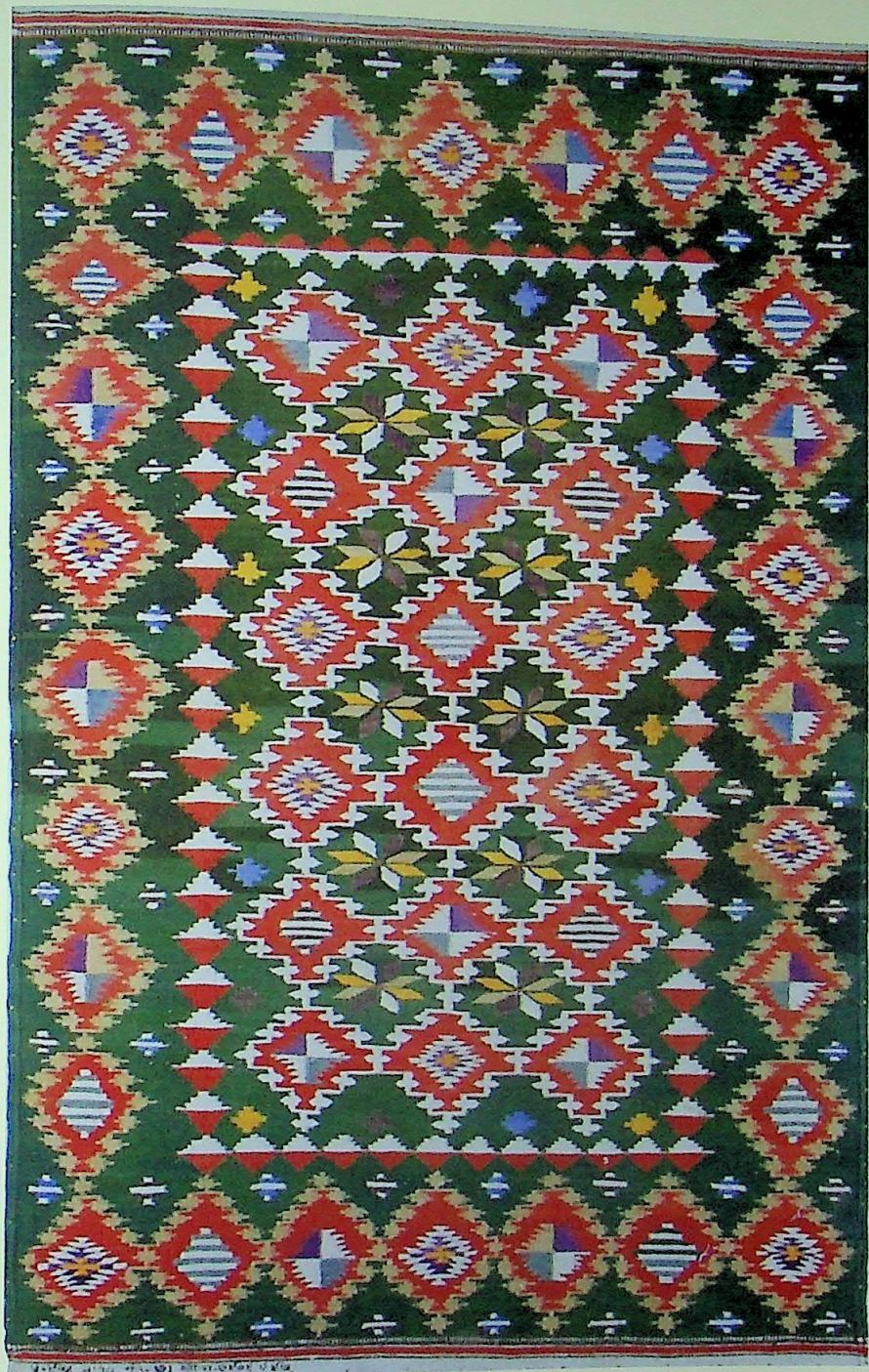
कलात्मक सतरंगी दरी, उदयपुर शैली, 19वीं श. 183 X 91 से.मी., सूती धागों एवं प्राकृतिक जल रंगों से निर्मित (तत्कालीन मूल्य 7.00 अंकित)

शिल्प प्रभाग

- यहां नागौर शैली की काष्ठ निर्मित वाद्यवादिका मण्डली की दुर्लभ और मनोहारी कलाकृतियों के साथ ही जयपुर, बूंदी, बीकानेर, महाराष्ट्र, उड़ीसा और बुन्देलखण्ड की मुंह-बोलती काष्ठ प्रतिमाएँ भी विद्यमान हैं।

- बंगाल और कम्पनी शैली के पक्वमृद (टेराकोटा) की प्राचीन मूर्तियां, पत्थर की विभिन्न आकार की खूंटियां, विभिन्न प्रकार के दीपक, पानी वाला पत्थर, हिलने वाला पत्थर, विभिन्न प्रकार के कलात्मक कलमदान, फोल्डिंग कमलदान, सीप और लोहे की दवातों के साथ हस्तलिखित पाण्डुलिपियों, ताड़पत्रों तथा भुर्जपत्रों के पठन में प्रयुक्त होने वाली रहलें और सीप के काम का झूला भी संग्रहालय की अनुपम धरोहर है।

स्वागत करता स्वचालित इन्द्र, बीकानेर शैली, 18वीं श., 55 X 24 से.मी., प्राकृतिक रंगों से काष्ठ निर्मित

नागौर शैली की पेंटिंग, 18वीं श., 29 X 85 से.मी., प्राकृतिक रंगों में लकड़ी पर लाख के काम

पगड़ीदान (दशावतार, गणपति, कल्कि व कृष्ण, कालिय मर्दन लीला के चित्रों सहित), पोकरण शैली, 19वीं श., 100 X 18.5 से.मी., बांस पर चपड़ी चन्द्ररस निर्मित

कलात्मक मोर - प्लेट पर खड़ा हुआ (पानदान) भारत, 19वीं श., 18 X 18 से.मी., सीप से निर्मित

नर्तकी पेपरमेसी से निर्मित, जयपुर शैली, 20वीं श., 19 X 9 से.मी.

कलात्मक फूल-पत्तीयुक्त बूंटेदार डिब्बी, परशियन, 18वीं श.,
11.5 X 7.5 से.मी., तामचीनी पर कलात्मक मीने का काम

बक्सा - कश्मीर शैली, 19वीं श., 27 X 9.5 से.मी., काष्ठ पर निर्मित चपड़ी चन्द्ररस का काम

शृंगारदान, उत्तर प्रदेश शैली, 18वीं श., 35 X 23 X 18 से.मी.,
लकड़ी पर प्राकृतिक जल रंगों से विभिन्न देवी-देवताओं के कागज पर चित्र बने हुए हैं

पाण्डुलिपि प्रभाग

- संग्रहालय में पाण्डुलिपियों के समृद्ध संग्रह की शुरुआत मात्र चार हस्तलिखित ग्रन्थों से हुई थी किन्तु आज संग्रहालय में एक लाख से अधिक हस्तलिखित ग्रन्थ उपलब्ध हैं जो ताड़-पत्र, भोज-पत्र, कागज, कपड़े, हाथी-दांत, चन्दन, मार्बल, ताम्र- पत्र, लकड़ी आदि पर अंकित हैं। एक लाख से अधिक हस्तलिखित ग्रन्थ 16 देशी-विदेशी भाषाओं एवं लिपियों में संग्रहीत एवं संरक्षित हैं जिनमें तेलगु, गुरुमुखी, बंगला, उर्दू, फारसी, अरबी, गुजराती, मराठी, संस्कृत, हिन्दी, प्राकृत, अपभ्रंश, तिरहुत, राजस्थानी, पाली, अवधी (खड़ी बोली), अंग्रेज़ी, बर्मीज, नेपाली, तिब्बती आदि प्रमुख हैं।

- संग्रहीत पाण्डुलिपियां एवं कलात्मक सामग्री श्री रामकृपालु शर्मा ने भारत के विभिन्न प्रान्तों तथा गाँवों के आन्तरिक स्थानों पर पहुँचकर एकत्र की है। इन्होंने प्रमुख रूप से उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात, कश्मीर, पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र, गोवा, बंगाल, उड़ीसा, दक्षिण भारत तथा राजस्थान के जयपुर, जोधपुर, कोटा, बूंदी, झालावाड़, उदयपुर, सिरोही, किशनगढ़, नागौर, नाथद्वारा, बीकानेर आदि स्थानों से एकत्र की हैं।
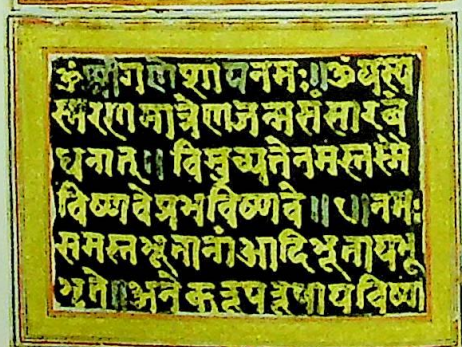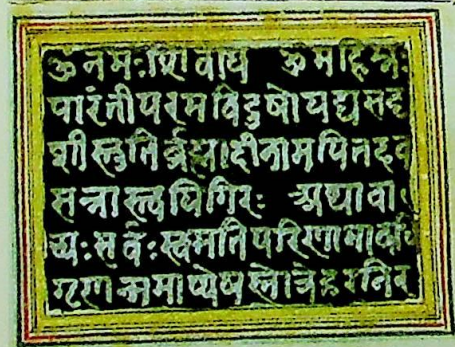
शिव महिम्न स्तोत्र (गुटका) पांडुलिपि, 18वीं श., अवध शैली, 9.5 X 7 से.मी., कागज पर रजताक्षरों से लिखित

विष्णुसहस्रनाम (गुटका) पांडुलिपि, 18वीं श., अवध शैली, 10.5 X 7.5 से.मी., कागज पर स्वर्णयुक्त स्याही से लिखित

- संग्रहालय के दुर्लभ ग्रन्थों में 300 वर्ष पूर्व की सूक्ष्माक्षरी श्रीमद् भागवत गीता है जिसमें मात्र 2 एमएम आकार में श्लोक लिखे हैं। 3 X 1.5 इंच आकार की सोने से चित्रित भागवत महापुराण, सोने की स्याही से लिखा कालिदास कृत 'मेघदूत काव्य' फारसी, अंग्रेजी व संस्कृत में है। प्रश्न, रमल, शकुन, छाया, स्वप्न, सामुद्रिक ज्योतिष के साथ गणित ज्योतिष की भी असंख्य पाण्डुलिपियां हैं।

- उर्दू एवं फारसी में रामायण, भागवत के अलावा गज एवं अश्व, बैल, ऊंट, गाय आदि पशुओं के आयुर्वेदिक एवं यूनानी पद्धति से इलाज, साथ ही तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र द्वारा भी चिकित्सा की अनेक विधियां बताई गई हैं। राजप्रासाद के प्रमुख इण्डोर खेल के रूप में हाथियों को लड़ाने एवं साधने तथा मस्त हाथी को वश में करने के बारे में भी गज चिकित्सा के ग्रन्थों में सविस्तार वर्णन किया गया है।

स्वर्ण पत्र पर दीवान श्री भीमसिह जी (मारवाड़) को देवनागरी लिपि में लिखा स्वर्ण पत्र, 1801 ई. सन्, 41 X 18.5 से.मी.

- संगीत शास्त्र में विभिन्न राग-रागनियों द्वारा रोगों का उपचार एवं चमत्कारी वातावरण उत्पन्न करने की विधियां भी बताई गई हैं। जयपुर नरेश सवाई जयसिंह से लेकर रामसिंह तक जयपुर में लिखी विभिन्न विषयों की पाण्डुलिपियां। चम्पू काव्य, चारण साहित्य, गीति काव्य, नाटक, छन्द, पद आदि के रूप में सुरक्षित हैं। पं. मधुसूदन ओझा द्वारा ऋग्वेद के अनुसार खगोल एवं भूगोल का सचित्र एवं

प्रमाणिक वर्णन दर्शनीय है। अनूठी धरोहर के रूप में शब्दभेदी बाण विद्या का ग्रन्थ, परा-अपरा विद्याओं से सम्बन्धित चित्रमय ग्रन्थ तथा 15वीं शताब्दी की कल्पसूत्र पद्धति पर आधारित सचित्र भागवत आदि कृतियां इस संग्रहालय की समृद्धि को द्विगुणित कर रही हैं।

- प्रमख ग्रन्थकारों में सेवग अखैराम, मूलचन्द, कवीन्द्र प्रभाकर, काशीनाथ शास्त्री, मधुसूदन ओझा, टिहरी गढ़वाल के महाराजा उत्तम सिंह आदि के स्वलिखित, स्वरचित अलभ्य ग्रन्थ बड़ी संख्या में हैं। इनके अतिरिक्त अनेक विद्वानों के अपने जीवनकाल के स्वलिखित, स्वरचित सहस्राधिक ग्रन्थ भी संग्रहालय में उपलब्ध हैं।

बौद्ध धर्म का सचित्र ग्रन्थ, 16वीं श., 59 X 19 से.मी., कागज पर जल रंगों से निर्मित

स्नेह सागर लीला (राधा कृष्ण विषयक्), 1803-1808 ई., 21.5 X 15 से.मी., कागज पर 17 चित्रों से युक्त हस्तलिखित पांडुलिपि, लिपि स्थान सटई, उत्तर प्रदेश, भाषा हिन्दी, लिपि देवनागरी

संग्रहालय में उपलब्ध सामग्री के कतिपय विषयों का विवरण :-

1. वेद
2. वैदिक संहिता
3. ब्राह्मण ग्रन्थ
4. श्रुति
5. स्मृति
6. आरण्यक
7. वैदिक कर्मकाण्ड
8. उपनिषद्
9. स्तोत्र
10. मीमांसा
11. तंत्र शास्त्र
12. मंत्र शास्त्र
13. यंत्र शास्त्र
14. तंत्र चिकित्सा
15. मूत्र चिकित्सा
16. आयुर्वेद
17. रसायन
18. कल्प
19. धनुर्वेद/आयुध शास्त्र
20. पुराणेतिहास
21. वेदान्त दर्शन
22. धर्म शास्त्र
23. ज्योतिष
    गणित ज्योतिष
    छाया ज्योतिष
    स्वर ज्योतिष
    प्रश्न ज्योतिष
    शकुन ज्योतिष
    स्वप्न ज्योतिष
    रमल ज्योतिष
    फलित ज्योतिष
    सामुद्रिक ज्योतिष
24. खगोल
25. भूगोल
26. अश्व चिकित्सा
27. गज चिकित्सा
28. वास्तु शास्त्र
29. क्रीड़ा शास्त्र
30. पाक शास्त्र
31. रत्न शास्त्र
32. काम शास्त्र
33. योग शास्त्र
34. नीति शास्त्र
35. संगीत शास्त्र
36. सामाजिक शास्त्र
37. नृत्य शास्त्र
38. न्याय दर्शन
39. संत साहित्य
40. लोक साहित्य
41. कोष
42. व्याकरण
43. इतिहास
44. परा-प्रकृति विज्ञान
45. वृक्ष विज्ञान
46. पाण्डुलिपि विज्ञान
47. वस्तु सूची शास्त्र
48. ग्रन्थ सूची
49. चारण साहित्य
50. जैन साहित्य
51. हिन्दी साहित्य
52. संस्कृत साहित्य
53. राजस्थानी साहित्य
54. पट्टे परवाने, दस्तावेज पत्र
55. सर्प विद्या विज्ञान
56. विविध विषय के ग्रंथ

सुदामा की पोटली से तन्दुल लेते हुए कृष्ण व उनको रोकती हुई रुक्मणी। फारसी में लिखित भागवत सीरिज का चित्र, अवध शैली, 1750 ई., 17 X 26 से.मी., कागज पर प्राकृतिक जल रंगों से निर्मित
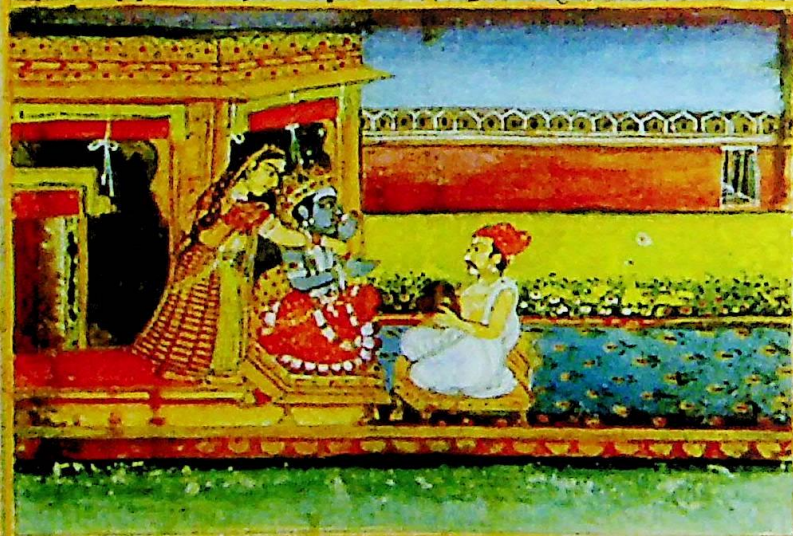
दवात

कलमदान

श्रीनाथ जी के चित्र एवं फूलों के बॉर्डर की काष्ठ निर्मित रहल, नाथद्वारा शैली, 18वीं श., 50 X 20 से.मी., प्राकृतिक जल रंगों पर चपड़ी, चन्द्ररस का काम

ग्रन्थावरण -14 सपने - अष्ट मंगल के चित्रों सहित, बीकानेर शैली, 18वीं श., 24 X 22.5 से.मी., कागज के गत्ते पर प्राकृतिक जल रंगों से निर्मित

हस्तलिखित ग्रन्थ श्रीमद् भागवत गीता सार, राजस्थान, 1828 ई., 18.5 X 11.5 से.मी.

चार भाषाओं का पेपर कटवर्क (मयूर का चित्र) अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत व फारसी, जयपुर शैली, 18वीं श. पूर्वार्द्ध – शायरी में कुछ उपमाएं हैं जिनमें बुलबुल, सुम्बुल और रेहान का उल्लेख है। बुलबुल मीठी आवाज में गाती है, सुम्बुल और रेहान फूल खुशबू से महकाते हैं। (20 X 25.5 से.मी.)

तंत्र–मंत्र–यंत्र

- भारतीय तंत्र–मंत्र– यंत्र से सम्बन्धित अत्यन्त दुर्लभ सामग्री के साथ विविध यंत्रों के सैकड़ों वर्ष पुराने चित्र संग्रहालय में विद्यमान हैं। ऐसे अप्रकाशित एवं सचित्र ग्रन्थों में बीजाक्षर मंत्रों सहित देवी–देवताओं के तांत्रिक स्वरूप दर्शनीय है। साथ ही उनके ब्रह्माण्ड स्वरूप को दिग्दर्शित करने वाले सैकड़ों यंत्रात्मक स्वरूप भी उपलब्ध हैं। इनमें शालिग्राम के स्वरूप, यंत्रों के निर्माण की विधि, अनुष्ठान का उपयुक्त समय, उनको प्रयोग में लेने की विधि तथा अनेक प्रकार के अनुभूत प्रयोगों का भी वर्णन है। शिवाम्बु कल्प (मूत्र चिकित्सा) पर भी महत्त्वपूर्ण कृतियां संग्रहालय में विद्यमान हैं।

चतुः षष्ठि योगिनी, जयपुर शैली, 19वीं श., 78.5 x 70 से.मी., सूती कपड़े पर प्राकृतिक जल रंगों से निर्मित चित्र
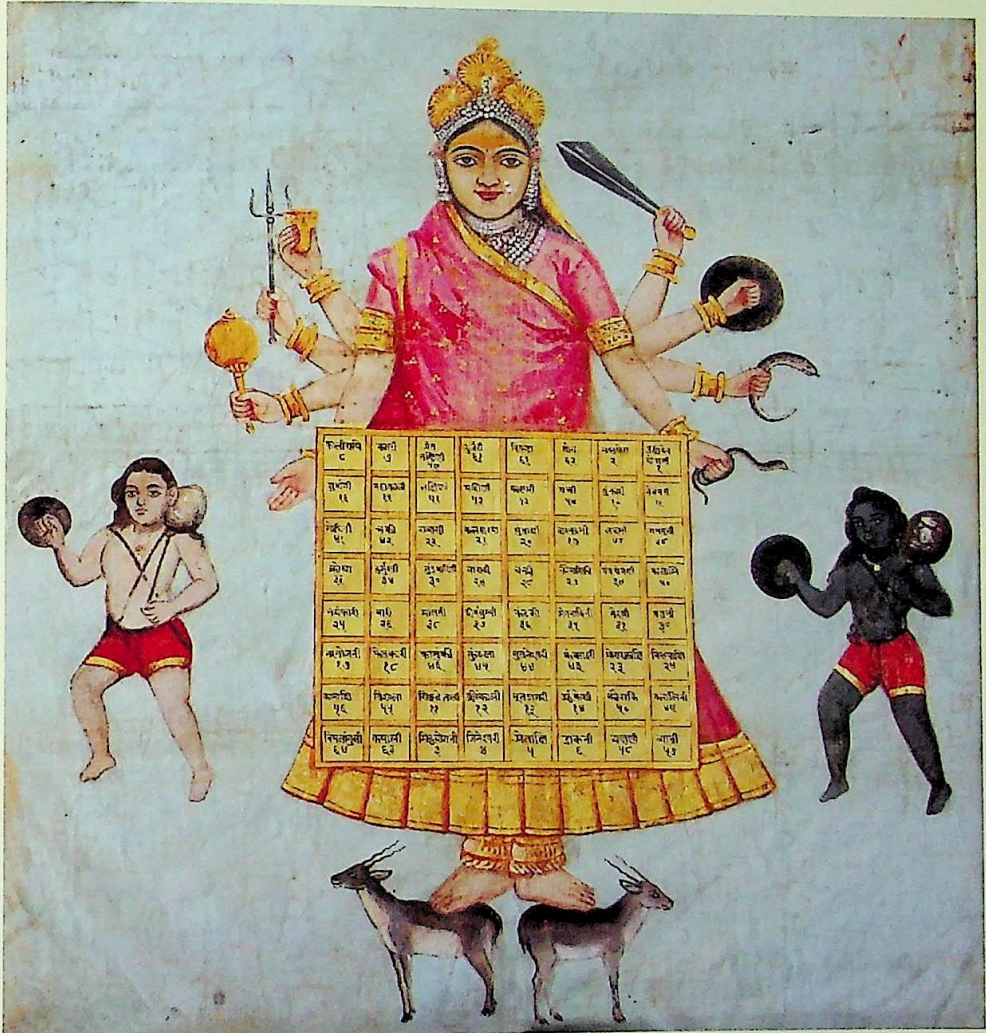
पंचमुखी हनुमान पताका (तन्त्र मंत्रादि से युक्त), जयपुर शैली, 18वीं श., कागज पर प्राकृतिक जल रंगों से निमिति चित्र, 64 x 52 से.मी. नकारात्मक ऊर्जा को दूर रखने के लिए प्रयुक्त की जाती है।
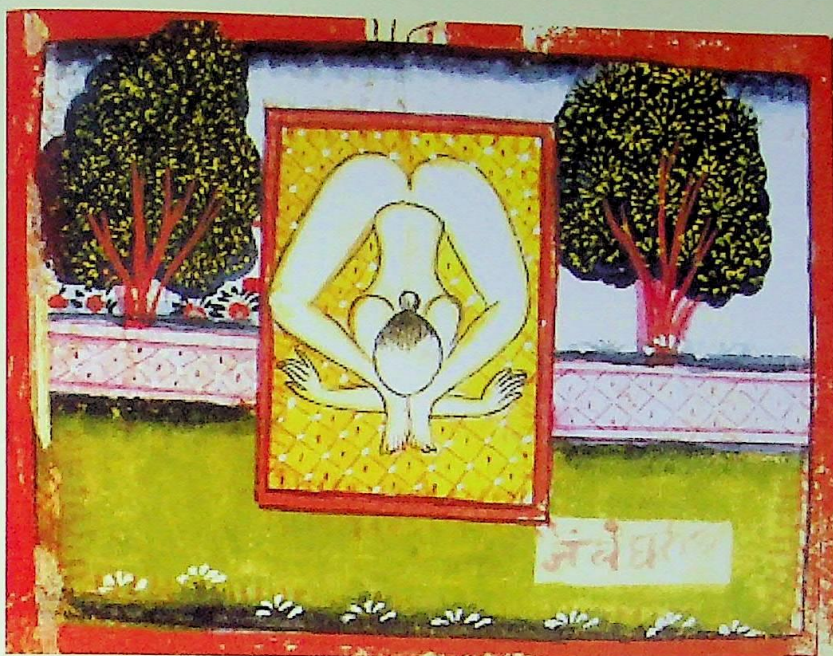
जलन्धर आसान - बुन्देहखण्ड शैली, 18वीं श. पूर्वार्द्ध, कागज पर प्राकृतिक जल रंगों से निर्मित, चित्रकार - जयतराम, शिष्य श्री दादुदयाल जी (12 X 16.5 से.मी.)

वेद आसन -बुन्देलखण्ड शैली, 18वीं श., 12 X 16.5 से.मी., चित्रकार जयतराम, कागज पर प्राकृतिक जल रंगों से निर्मित

विभिन्न प्रकार के सामाजिक स्त्री-पुरुषों के स्वरुप मिट्टी के बने हुये, विभिन्न मापों में, 19वीं श., बंगाल शैली

ग्रन्थावरण - (1) शिव-पार्वती, नारद (2) ऋद्धि-सिद्धि सहित गणपति (3) राधा-कृष्ण, जयपुर शैली, 18वीं श., 40 X 21.5 से.मी., काष्ठ पर प्राकृतिक रंगों [illegible] पर पपड़ी चंद्ररस का काम

खगोल, भूगोल एवं फलित ज्योतिष

- संग्रहालय में मानव की भविष्य सम्बन्धी जिज्ञासाओं को शांत करने वाले ज्योतिष से सम्बन्धित बहुमूल्य ग्रन्थ विद्यमान हैं। यथा – फलित ज्योतिष, गणित ज्योतिष, स्वर ज्योतिष, स्वप्न ज्योतिष, छाया ज्योतिष, शकुन ज्योतिष, सामुद्रिक ज्योतिष, और रमल ज्योतिष की पाण्डुलिपियां संग्रहालय में सुलभ हैं। यहां भूगोल, खगोल से सम्बन्धित विद्यावाचस्पति पंडित मधुसूदन ओझा के हाथ से बनाए हुए सैकड़ों चित्रों तथा ग्रन्थों का अद्वितीय संग्रह है।

- सृष्टि के उद्भव को रेखांकित करती देव ऋषि, मनुष्य, तिर्यक वर्गों की उत्पत्ति से सम्बन्धित सचित्र ग्रन्थावली और 'सचित्र पट' भी यहां उपलब्ध है।

ताम्बे पर फारसी में लिखा गया खगोलिय यंत्र 18वीं श. 25 X 18 से.मी.

पुरुष हस्त का सामुद्रिक स्वरूप, 1840 ई., मसूदा, अजमेर शैली, 39 x 27.5 से.मी., चित्रकार रखदोला, कागज पर प्राकृतिक जल रंगों से निर्मित
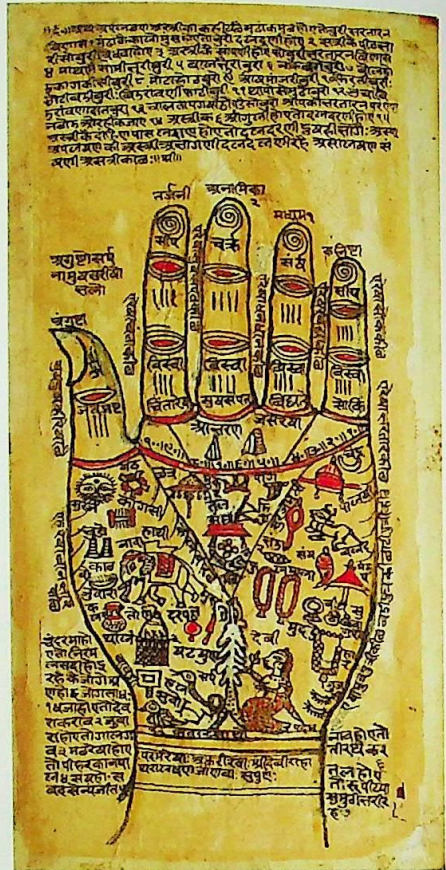
स्त्री हस्त का सामुद्रिक स्वरूप, 1840 ई., मसूदा, अजमेर शैली, 39 x 27.5 से.मी., चित्रकार रखदोला, कागज पर प्राकृतिक जल रंगों से निर्मित

जन्तर मन्तर

- मनुष्य अनादि काल से ही आकाश की ओर उत्सुकता एवं जिज्ञासा से देखता रहा है। विभिन्न ग्रहों की गति को समझने और रहस्यों को सुलझाने के लिए वेधशालाओं का निर्माण किया गया है। मनुष्य अपने बुद्धिबल से विभिन्न तारों, ग्रहों, नक्षत्रों, आकाशगंगा, सूर्य, चन्द्र आदि की आंतरिक रचना व अन्य दशाओं आदि का अध्ययन कर निष्कर्ष पर पहुँचने का प्रयास करता रहा है। यद्यपि ऋग्वेद में ब्रह्माण्ड के बारे में विस्तार से बताया गया है। तथापि जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय ने ब्रह्माण्ड के रहस्यों को सरल तरीके से आमजन को समझाने के लिए दिल्ली, जयपुर, मथुरा, उज्जैन, वाराणसी में वेधशालाओं

का निर्माण किया। मानव उत्कंठा को शांत करने के उद्देश्य से संग्रहालय में सम्पूर्ण वेधशाला के सभी यंत्रों को प्रदर्शित किया गया है जिनमें सम्राट यंत्र, यंत्र राज, ध्रुवांश यंत्र, नवग्रह 12 राशियों का यंत्र, छोटा यंत्र, नाड़ी वलय एवं इनके निर्माण में काम आने वाले मापने के स्केल, कम्पास, डिवाइडर आदि भी बड़ी संख्या में प्रदर्शित किये गये हैं। अक्षांश एवं देशान्तर रेखाओं की सारणियां, नव ग्रह एवं राशियों की सैकड़ों वर्ष पुरानी सारणियां भी यहां देखी जा सकती हैं।

नाड़ी वलय यंत्र, जयपुर, 18वीं श., 13 X 16 से.मी., पीतल से निर्मित

वास्तु शास्त्र प्रभाग

- संग्रहालय में वास्तु शास्त्र से सम्बन्धित अनेक सचित्र एवं चित्र रहित ग्रन्थ प्रदर्शित हैं जिनसे हम मन्दिर निर्माण के अधो एवं ऊर्ध भाग की निर्माण प्रक्रिया को सहजता से समझ सकते हैं। इसी प्रकार गृह निर्माण में 250 से अधिक राजप्रासादों, गढ़ एवं किलों के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के आवासीय भवनों का स्वरूप उनके शुभ-अशुभ लक्षणों तथा इन्हें बनाने की वैज्ञानिक विधि का भी वर्णन है। पानी के अन्दर भवन बनाने की विधि का भी सविस्तार वर्णन है।
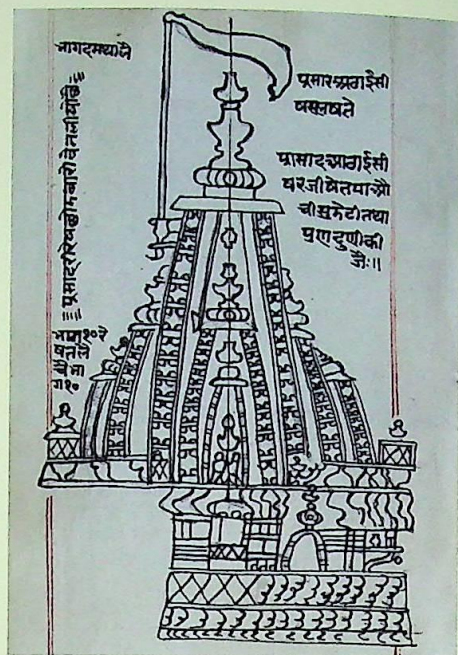
वास्तु शास्त्र मन्दिर निर्माण विधि चित्रों सहित, 1793 ई. सन्, सचित्र पाण्डुलिपि कागज पर, ग्रंथकार : विश्वकर्मा, माप : 26X17 से.मी.

मन्दिर की कलात्मक टोडी का स्वरूप, उदयपुर शैली, 18वीं श., 26 X 21 से.मी.

आयुर्वेद, रसायन व तंत्र चिकित्सा प्रभाग

- पंचम वेद के रूप में स्वीकार्य आयुर्वेद और भारतीय चिकित्सा पद्धति के कल्प, रसायन, भेषज, शल्य, निदान आदि से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ, साथ ही यहां आयुर्वेद के अनुभूत प्रयोगों, घरेलू चिकित्सा पद्धतियों, औषधियुक्त व्यंजनों की निर्माण प्रक्रिया और रोगोपचार, बाल चिकित्सा, स्त्री चिकित्सा और सौंदर्य कल्प पर भी महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हैं। शाकाहारी और मांसाहारी चिकित्सा पद्धतियों की महत्त्वपूर्ण विधियों से सम्बन्धित ग्रन्थ इस संग्रहालय की विशेषता है। विभिन्न भाषाओं के ये ग्रन्थ गुजराती, मराठी, अरबी, फारसी, उर्दू, गुरुमुखी, संस्कृत, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषाओं में हैं। इनकी पाण्डुलिपियों में अनेक तंत्र, मंत्र, यंत्र भी प्रदर्शित किये गये हैं जिनमें जड़ी-बूटियों से इलाज के साथ तांत्रिक अनुष्ठान का भी उल्लेख है। इनमें ऐसी जड़ी-बूटियों का भी उल्लेख है जिन्हें पास रखने मात्र से सिद्धि प्राप्ति एवं रोगों का नाश होता है। ग्रन्थों में स्त्री-पुरुषों के सौंदर्य वर्णन सहित शरीर के विभिन्न अंगों का विस्तार से वर्णन, प्रत्येक अंग के रखरखाव व समय विशेष पर लगाई जाने वाली औषधियों का भी उल्लेख है। समयानुरूप प्रयुक्त किये जाने वाले सौंदर्य प्रसाधनों का उल्लेख, 'जीवेत् शरदः शतम्' के अनुरूप 100 वर्ष की आयु प्राप्त करने के अनुभूत चमत्कारी कल्प, धातु, उपधातु, शोधन, अनेक प्रकार के अर्क, आसव द्वारा स्त्री-

विभिन्न ज्वरों के प्रतीकात्मक चित्र, मेवाड़ शैली, 9x9 से.मी., कागज पर प्राकृतिक जल रंगों से निर्मित

पुरुषों के अनेक बाजीकरण प्रयोग, शिलाजीत शोधन, नारियल के अनुभूत प्रयोग, केशकल्प के चमत्कारी नुस्खे, भस्मे, आसव, तेल पारे की गुटिका, स्वर्ण व रजत निर्माण विधियां, रसायन निकालने के यंत्रों का स्वरूप, उन यंत्रों के नाम, पारे से निर्मित माला, मणियां, शिवलिंग, श्रीयंत्र भी प्रदर्शित हैं। यहां परा- प्रकृति रसायन से ध्यान एवं योग के द्वारा अनेक चमत्कारी प्रयोग देखने को मिलते हैं।

अभिलेख

- संग्रहालय में पुरातात्विक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण (पुराने दबे हुए खजानों की खोज से सम्बन्धित) कई बीजक पत्र हैं। इनके अतिरिक्त तत्कालीन राज्य प्रबन्ध और शासकीय कूटनीति से सम्बन्धित पट्टे परवाने, दस्तूर बहियां, राजदरबारों एवं रनिवासों के दैनिक खर्च का ब्यौरा, राजवंशावलियां, इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान रखने वाले शासकों के पत्र भी यहां की विशिष्ट निधि है। इनके अलावा अरबी, फ़ारसी, उर्दू के स्वर्णांकित खुशखत और सुलेख के भी नायाब नमूने यहां देखे जा सकते हैं।

शोध, प्रकाशन व प्रदर्शनियां

- संग्रहालय में उपलब्ध संसाधनों से अब तक देश-विदेश के 70 से अधिक शोधार्थी विभिन्न विषयों के अपने शोध प्रबन्धों में इस संस्थान में संग्रहीत सामग्री का उपयोग कर लाभान्वित हो चुके हैं।

प्रकाशन

- संग्रहालय के समृद्ध संग्रह को अधिक उपयोगी बनाने के लिए संग्रहीत सामग्री के प्रलेखीकरण द्वारा ग्रन्थ-सूचियों एवं अन्य संदर्भ ग्रन्थों का प्रकाशन किया जा रहा है। संग्रहालय में संग्रहीत 16वीं शताब्दी से 20वीं शताब्दी के हिन्दी भाषा के 657 लेखकों एवं काव्यकारों की 38 विषयों की 2236 हस्तलिखित पाण्डुलिपियों की वर्गीकृत सूची के रूप में **ग्रन्थ पारिजात (खण्ड-1)** का प्रकाशन वर्ष 2001 में किया गया है।
- ग्रन्थ पारिजात का दूसरा खण्ड मुद्रणाधीन है जिसमें सेवग अखैराम एवं उसके परिजनों द्वारा ई. सन् 1709 से 1835 ई. के मध्य लिखित रचनाओं का विवरण सम्मिलित किया गया है। सेवग परिवार ने 126 वर्षों की अवधि में न केवल राजस्थान बल्कि भारत के अनेक प्रान्तों के इतिहास का सजीव चित्रण किया है। ग्रन्थ पारिजात के इस खण्ड में 16वीं से 19वीं शती तक के 650 ग्रन्थकारों के 125 से अधिक लिपिस्थान एवं 100 से अधिक लिपिकारों का
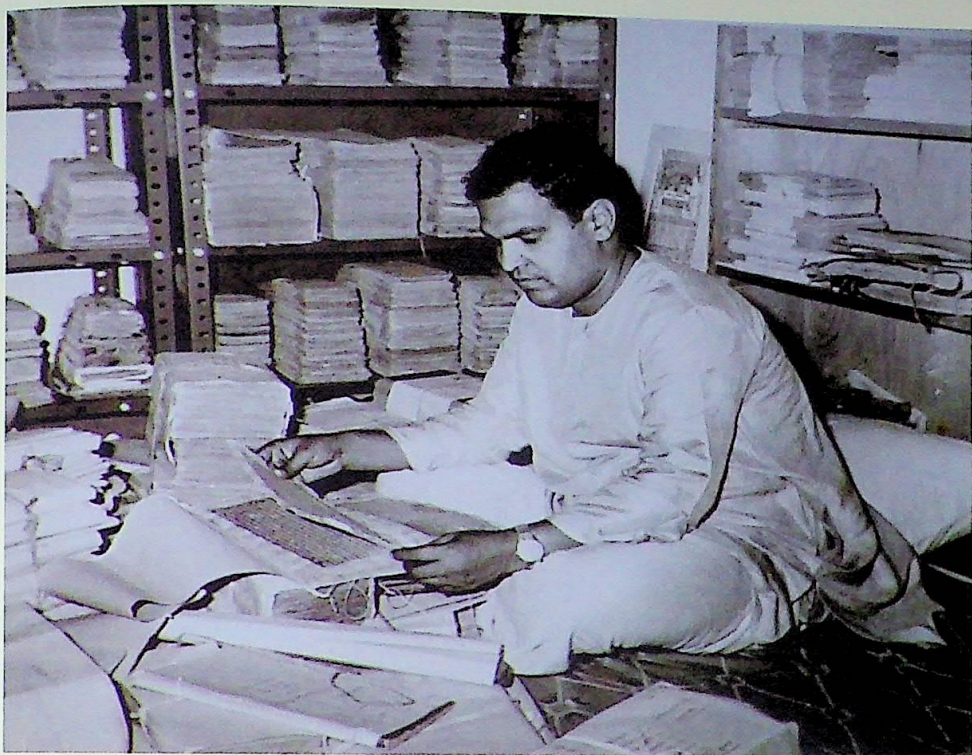
संग्रहालय में पांडुलिपियों को व्यवस्थित करने हेतु वर्गीकृत करते हुए श्री रामकृपालु शर्मा (सन् 1970)

वर्णन किया गया है। इसमें गीत, छन्द, पद, कवित्त, निसाणी तथा दोहों आदि का उल्लेख है। इसमें ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण अनेक जातियों की वंशावलियाँ, नामावलियाँ तथा सामाजिक उत्सव, रीति-रिवाज, रहन-सहन आदि सभी का वर्णन है। इसमें सेवग अखैराम के पुत्र, पौत्र, प्रपौत्रादि की रचनाओं को भी सम्मिलित किया गया है जिससे राजस्थानी साहित्य को समृद्ध करने में इनके वंश की साहित्यिक विरासत का विशिष्ट योगदान प्रकाश में आया है।

- संग्रहालय द्वारा तंत्र शास्त्र पर भास्कराचार्य द्वारा **श्रीललितासहस्रनामस्तोत्र** का वृहद भाष्य (बालातप भाष्य) जयपुर के विद्वान् शम्भुनाथ नागर का लिखे ग्रन्थ का प्रकाशन कराया गया जिसका विमोचन तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा किया गया।

- **श्री संजय शर्मा संग्रहालय एवं शोध संस्थान (समर्पण की विकास यात्रा** – 1955-2003) शीर्षक से प्रकाशित पुस्तिका में संग्रहालय के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी गई है।
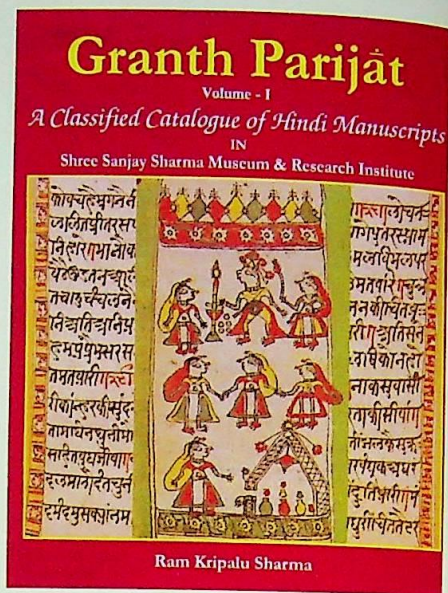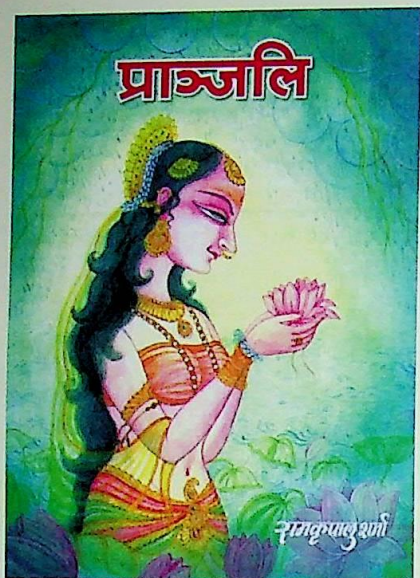
- श्री राम कृपालु शर्मा की गद्य–पद्यमयी कृति **'प्रांजलि'** का प्रथम संस्करण 1954 में प्रकाशित हुआ जिसकी प्रतियाँ अब अनुपलब्ध हैं। पुस्तक का सचित्र द्वितीय संस्करण वर्ष 2015 में पुनर्मुद्रित हुआ है। इसके बारे में आगे के पृष्ठों पर विस्तार से जानकारी दी गई है।

- श्री संजय शर्मा संग्रहालय एवं शोध संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष द्वारा रचित काव्य कृति 'प्राजंलि' के द्वितीय संस्करण के लोकार्पण समारोह से सम्बन्धित पुस्तिका "काव्य संग्रह **'प्रांजलि' का लोकार्पण : एक प्रलेख**" (2018 में प्रकाशित)

संग्रहालय के एक कक्ष में व्यवस्थित पांडुलिपियां

प्रदर्शनियां

श्री संजय शर्मा संग्रहालय ने बिना किसी व्यक्ति एवं संस्था की सहायता के स्वयं अपने साधनों से आमजन में कला, संस्कृति, इतिहास एवं अपनी विरासत के प्रति जनचेतना जागृत करने के उद्देश्य से अनेक प्रदर्शनियों का आयोजन किया है।

1. **बिड़ला सभागार, जयपुर –** श्री राम कृपालु शर्मा द्वारा संस्थापित श्री संजय शर्मा संग्रहालय एवं शोध संस्थान ने अपनी पहली वैदिक प्रदर्शनी जयपुर के बिड़ला सभागार में 1994 में आयोजित की गई थी। इस प्रदर्शनी में वेदों, उपनिषदों, पुराणों की प्राचीनतम पाण्डुलिपियों एवं मंडलों के रेखाचित्रों, ज्यामितिक हवनकुण्डों, हवन उपकरणों, ज्योतिष यंत्रालयों से सम्बन्धित सामग्री का प्रदर्शन किया गया था। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन तत्कालीन महामहिम राज्यपाल बलिराम भगत द्वारा किया गया था।

2. **रवीन्द्र मंच, जयपुर –** संग्रहालय ने अपनी दूसरी प्रदर्शनी 1998 में अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक सम्मेलन के अवसर पर आयोजित की थी जिसमें वैदिक सामग्री, यज्ञ-याग उपकरणों, ज्योतिष सम्बन्धी यंत्रों, नक्षत्र विज्ञान आदि से सम्बन्धित सामग्री देश-विदेश के वैदिक विद्वानों के दर्शनार्थ रखी गई थी। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन भारत के पूर्व महामहिम राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा के कर-कमलों से हुआ था। इस अवसर पर श्री शंकर दयाल जी शर्मा द्वारा संग्रहालय के संस्थापक श्री रामकृपालु शर्मा को सम्मानित भी किया गया।

3. **सूचना केन्द्र, कलकत्ता –** संग्रहालय द्वारा प्रदर्शन योग्य चयनित सामग्री के प्रदर्शन हेतु 11 से 13 सितम्बर, 1999 तक कलकत्ता के सूचना केन्द्र में तीसरी प्रदर्शनी आयोजित की गई। कलकत्ता की साहित्यिक, सांस्कृतिक संस्था 'अर्चना' के अनुरोध पर आयोजित इस प्रदर्शनी में 200 से अधिक मूल पाण्डुलिपियां तथा दुर्लभ चित्रों के 25 पैनल प्रदर्शित किये गये थे। प्रदर्शनी को 10 हजार से अधिक बुद्धिजीवियों, साहित्यकारों और विद्यार्थियों द्वारा देखा गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन पश्चिम बंगाल सरकार के पूर्व मुख्य सचिव श्री तरुण दत्ता द्वारा किया गया था।

श्री संजय शर्मा संग्रहालय को प्राचीन पाण्डुलिपियों, दुलर्भ चित्रों एवं कला-वस्तुओं के प्रदर्शन हेतु प्रमुख कला संस्थाओं की ओर से निरन्तर अनुरोध प्राप्त होते रहे हैं। गत वर्षों में वाराणसी, लखनऊ, शिमला, चण्डीगढ़, मुम्बई आदि शहरों तथा जापान, जर्मनी, ब्रिटेन और अमेरिका से भी ऐसे ही अनुरोध प्राप्त हुए हैं।

संग्रहालय के संस्थापक अध्यक्ष

श्री रामकृपालु शर्मा – एक परिचय

जन्म तिथि एवं स्थान – कवि, लेखक, चिन्तक, पाण्डुलिपि विशेषज्ञ, कला अनुरागी और संग्रहक श्री रामकृपालु शर्मा का जन्म 4 सितम्बर, 1932 को जयपुर के निकट नांगल कस्बे में उनके ननिहाल में हुआ।

माता–पिता – पंडित बंशीधर शर्मा के इस आत्मज को इनकी माता श्रीमती भौंरी देवी मात्र 13 दिन की अवस्था में ही छोड़कर देवलोकवासिनी हो गई।

लालन–पालन – माता के असामयिक देहावसान के कारण इनका पालन–पोषण इनके नाना श्री जोधराज जोशी एवं नानी श्रीमती मोतीबाई की छत्रछाया में हुआ। बाल्यकाल में नाना-नानी से मिले स्नेह और संस्कारों ने इन्हें अत्यधिक प्रभावित किया।

शिक्षा–दीक्षा – इनकी प्राथमिक शिक्षा गंवाई गांव ढोढसर एवं चीथवाड़ी में हुई। आयुर्वेद का अध्ययन रामगढ़ शेखावाटी में तथा संस्कृत शिक्षा का उच्च स्तरीय अध्ययन वाराणसी में किया।

वैवाहिक बन्धन – वर्ष 1947 में इनका परिणय–सूत्र–बंधन पद्मावती के साथ खेजरोली में हुआ। इस पुण्य परिणय के फलस्वरूप पुत्र तिलक शर्मा एवं संजय शर्मा की प्राप्ति हुई। पुण्य आत्मा संजय बचपन में ही रोगग्रस्त होने पर 16 वर्ष की आयु में दिवंगत हो गये। ज्येष्ठ पुत्र तिलक शर्मा, पुत्रवधू मधु शर्मा, सुपौत्री तृचा शर्मा, सुपौत्र चैतन्य शर्मा, पौत्रवधू ईशा शर्मा (ऐश्वर्या) एवं पौत्र श्रीवत्स शर्मा ही अब श्री रामकृपालु जी के स्नेह सम्बल हैं।

संघर्षशील जीवन – श्री शर्मा का जीवन अत्यंत संघर्षशील रहा। इनका वर्ष 1951–52 में जयपुर आगमन हुआ। आर्थिक संकट के दौरान जीवन निर्वाह के लिए 'पत्रहाट' में भी कार्य किया। मात्र 30 रुपए की मासिक वृत्ति का अध्यापन ही आजीविका का साधन रहा। बाद में आप रत्न, हस्तशिल्प और कृषि व्यवसाय से भी सम्बद्ध रहे।

साहित्य सृजन – अध्ययनशील प्रवृत्ति एवं विलक्षण मेधा के स्वामी श्री शर्मा में प्रारम्भ से ही अनुभूतियों की सघनता और अभिव्यक्ति की स्वाभाविक साधना विद्यमान रही। परिणामस्वरूप मात्र 15–16 वर्ष की आयु में ही छायावाद–रहस्यवाद से प्रभावित हो काव्य सृजन करने लगे जो 'प्रांजलि' जैसी गद्य–पद्यमयी प्रौढ़ रचना के रूप में उद्भव हुआ। 'प्रांजलि' के बाद कहानियों एवं गद्य–गीतों की विपुल रचनावली 'वाङ्मयी' का भी प्रणयन किया किन्तु अर्थाभाव और अन्य कठिनाइयों के कारण यह ग्रन्थ मुद्रित नहीं हो सका।

अन्तर्वेदना – 'वाङ्मयी' के अप्रकाशित रहने पर इसकी अन्तर्वेदना ने इन्हें इस बात का अहसास करवा दिया कि एक कृति का अप्रकाशित रहना कितनी व्यथा दे सकता है। इस स्थिति ने यह सोचने को बाध्य कर दिया कि उन लाखों साहित्यकारों, चित्रकारों और अन्य ऋषि–मुनियों की आत्माएं कितनी कलपती होंगी जिनकी अनुपम रचनाएं प्रकाश में आये बिना ही अंधकार में विलीन हो गईं। इसी विचार ने इन्हें ऐसी सभी विधाओं की उत्कृष्ट रचनाओं, चित्रों और अन्य कलाकृतियों को सुरक्षित एवं संरक्षित कर जनसामान्य के समक्ष प्रस्तुत करने को प्रेरित किया।

संकल्प और उसका साकार होना

- श्री रामकृपालु शर्मा ने ग्रन्थ संग्रह का पुनीत कार्य मात्र 4 ग्रन्थों से प्रारम्भ किया था। ग्रन्थ प्राप्ति उत्तरोत्तर एक व्यसन बनता चला गया किन्तु अर्थाभाव ने संकल्प को झकझोर कर रख दिया।

- मात्र 4 ग्रन्थों से शुरू हुआ दुर्लभ ग्रन्थों का संग्रह वर्ष 1970 तक 30 हजार तक पहुँच गया और धीरे–धीरे यह 48 हजार और कुछ वर्षों बाद 60 हजार तक पहुँच गया। संकल्प यह था कि जब संग्रह एक लाख हो तो संग्रहालय का लोकार्पण करवाया जाये। वह दिन भी आ गया और 12 फरवरी, 1999 को केन्द्र सरकार के तत्कालीन मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ. मुरली मनोहर जोशी के कर–कमलों से 'श्री संजय शर्मा संग्रहालय और शोध संस्थान' के रूप में इसका लोकार्पण हुआ।

- इसके बाद भी संग्रहालय के संग्रह में निरन्तर वृद्धि होती गई और जयपुर के चौड़ा रास्ता के

ठठेरों के रास्ते में स्थित संग्रहालय को आमेर रोड पर जलमहल के सामने 'श्री संजय शर्मा संग्रहालय और शोध संस्थान' को नवनिर्मित भवन में स्थानान्तरित किया गया। आज यह संस्थान एक पंजीकृत सार्वजनिक प्रन्यास बन चुका है और इसे एक लाख से भी अधिक हस्तलिखित ग्रन्थों, ताड़पत्र ग्रन्थों, भूर्जपत्र ग्रन्थों के साथ ही हजारों दुर्लभ कलाकृतियों, चित्रकृतियों का स्वामित्व प्राप्त है।

- धुन के धनी श्री रामकृपालु शर्मा की निरन्तर 50 वर्ष की एकनिष्ठ साधना, निर्लिप्त समर्पण और श्रद्धा ने दुर्लभ एवं प्रामाणिक पाण्डुलिपियों, कला वस्तुओं, चित्रकृतियों, दस्तावेजों तथा संतों एवं काव्यकारों द्वारा विरचित हस्तलिखित ग्रन्थों के विपुल संग्रह के रूप में बिना किसी आर्थिक सहयोग के स्वअर्जित धन से श्री संजय शर्मा संग्रहालय का निर्माण किया।
- श्री रामकृपालु शर्मा द्वारा सर्वधर्म समभाव के आधार पर सभी धर्मों, जातियों एवं सम्प्रदायों की संस्कृति को एक स्थान पर संजोने का ऐसा कार्य किया गया है जो एक सहस्राब्दी में भी किसी व्यक्ति द्वारा अपने स्वयं की सामर्थ्य से अब तक नहीं किया जा सका है। संग्रहालय एवं शोध संस्थान का अवलोकन करने वाले गण्यमान्य व्यक्तियों द्वारा अभिव्यक्त उद्गारों से भी यह तथ्य परिलक्षित होता है।

प्राच्य विद्या के पुरोधा एवं प्रसारक

- श्री रामकृपालु शर्मा ने दुर्लभ एवं अप्रकाशित ग्रन्थ प्रकाशनार्थ अनेक संस्थाओं को उपलब्ध कराये हैं। इसके अतिरिक्त राजस्थान एवं बनारस के ग्रन्थागारों को करीब 1000 पाण्डुलिपियां भेंट स्वरूप प्रदान की हैं।
- प्राच्य विद्या पर आकाशवाणी और दूरदर्शन पर आपकी अनेक वार्ताएं प्रसारित हुई हैं। देशी-विदेशी शोधार्थियों को पाण्डुलिपियों के अध्ययन में निःशुल्क सहायता प्रदान की है।

सम्मान और अलंकरण

- श्री रामकृपालु शर्मा के भारतीय प्राचीन कला एवं संस्कृति तथा विरासत को संरक्षित करने के उल्लेखनीय कार्य को देखते हुए अनेक पुरस्कारों से सम्मानित करने के साथ ही इन्हें अनेक अलंकरणों से भी विभूषित किया गया है। इनमें राजस्थान सरकार द्वारा दुर्लभ कलाकृतियों के संग्रहकर्ता हेतु प्रशस्ति-पत्र (2007), समाज सम्पदा सम्मान (2005), कला संस्कृति सम्मान (2002), वैदिक संस्कृति सम्मान (2001), कलकत्ता का शारदा सम्मान (1999), वेद विद्या संरक्षण सम्मान (1999) तथा विभूति सम्मान (1999) प्रमुख हैं।

पुस्तक 'प्रांजलि' का लोकार्पण करते हुए मुख्य अतिथि श्रीमती किरण माहेश्वरी, (उच्च शिक्षा मंत्री, राजस्थान सरकार) लेखक श्री रामकृपालु शर्मा, न्यायमूर्ति जे.के. रांका, डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम', डॉ. हरिराम आचार्य और देवर्षि डॉ. कलानाथ शास्त्री (21 नवम्बर, 2017)

'प्रांजलि' के द्वितीय संस्करण का लोकार्पण

- विषम आर्थिक स्थिति के कारण वर्ष 1954 में प्रांजलि के प्रथम संस्करण का प्रकाशन तो हुआ लेकिन लेखक को मात्र 15 प्रतियाँ ही प्राप्त हो सकीं। अर्थसंकट से उबरने के बाद जब प्रकाशक से मात्र 35 प्रतियाँ ही प्राप्त हो सकीं, शेष प्रतियाँ चूहों द्वारा नष्ट कर दी गईं।

- प्रांजलि के प्रथम संस्करण को श्री रामकृष्ण 'शिलीमुख', श्री सुमित्रानन्दन पंत, श्री रामकुमार वर्मा जैसे शिखर साहित्यकारों की सराहना और आशीर्वाद मिला। प्रांजलि के द्वितीय संस्करण को सचित्र एवं नये रूपाकार में वर्ष 2015 में प्रकाशित किया गया जिसके लोकार्पण के लिए लम्बा इंतजार करना पड़ा और अन्ततः वर्ष 2017 में इसका लोकार्पण संभव हुआ।

- प्रांजलि के द्वितीय संस्करण का लोकार्पण मंगलवार 21 नवम्बर, 2017 को राजस्थान सरकार की उच्च शिक्षा मंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी द्वारा किया गया। लोकार्पण के समय श्रीमती माहेश्वरी ने कहा कि छायावाद - रहस्यवाद जैसी गूढ़ काव्यशैली की 82 कविताओं से सजी यह पुस्तक अपने भावपूर्ण कथ्य एवं स्तरीय मुद्रण की दृष्टि से किसी

'प्रांजलि' के लोकार्पण समारोह में बोलते हुए रचनाकार श्री रामकृपालु शर्मा।

धरोहर से कम नहीं है। इस अवसर पर न्यायमूर्ति श्री जे.के. रांका, कवि, विचारक एवं आलोचक डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम', संस्कृत विद्वान् देवर्षि कलानाथ शास्त्री तथा हिन्दी एवं संस्कृत भाषा के विद्वान् एवं कवि डॉ. हरिराम आचार्य भी उपस्थित थे।

'प्रांजलि' का साहित्यिक मूल्यांकन

- वागीश्वरी प्रकाशन, जयपुर द्वारा प्रकाशित 'प्रांजलि' का सचित्र द्वितीय संस्करण अपने नव रूपाकार और मुद्रण की आधुनिक तकनीक के कारण अधिक आकर्षक और प्रभावशाली बन पड़ा है। पुस्तक की 31 पृष्ठों की पांडित्यपूर्ण भूमिका में अध्यात्म, संस्कृति, रहस्यवाद, छायावाद, प्रगतिवाद आदि पर लेखक ने चिन्तनपूर्ण विचार व्यक्त किये हैं जो उनकी अनुपम गद्य-निपुणता का परिचायक है। यह कवि के दार्शनिक रूप, विपुल विद्वता और आचार्यत्व की भी अभिव्यक्ति है।

- वयोवृद्ध कवि श्री रामकृपालु शर्मा के युवा वय के सरस स्पन्दनों से ओतप्रोत 82 काव्य गीतियों में कवि के बुद्धिजनित चिन्तन और हृदयोपार्जित कल्पना का प्रांजल प्रवाह है जो काव्य सौंदर्य का दिग्दर्शन कराता है।

- इस संस्करण की प्रत्येक कविता में निहित कवि के भावों और भावनाओं को अभिव्यक्त करने की दृष्टि से रेखाचित्रों का सफल प्रयोग किया गया है। इन सरस कविताओं में कवि कल्पना का सौंदर्य ही नहीं अपितु दर्शन की दीप्ति भी दृष्टिगत हुई है। कविताओं में तत्कालीन स्वनामधन्य महाकवि जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पंत, महादेवी वर्मा और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जैसी प्रौढ़ काव्य शैली की झलक देखने को मिलती है।

हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकारों एवं विद्वानों ने इस काव्य कृति का साहित्यिक मूल्यांकन करते हुए जो अभिमत व्यक्त किये हैं उनमें से कुछ यहां उल्लेखनीय हैं –

1. इतनी तरुण अवस्था में भावना और चिन्तन का जो सरस और प्रौढ़ संयोग-समायोग श्री शर्मा अपनी कविता में समाविष्ट कर सके हैं, बहुत से सुप्रतिष्ठित प्रौढ़ कवियों में भी प्राय: देखने को नहीं मिलता। 'प्रांजलि' की भूमिका आजकल के किसी भी आचार्य की लेखनी को चुनौती देने में समर्थ है।

– श्री रामकृष्ण शुक्ल 'शिलीमुख' (20.10.1954)

2. 'प्रांजलि' के गीतों में कवि का दृष्टिकोण रहस्यवादी है, उसमें उनके करुण हृदय की जिज्ञासा, संवेदना और सौन्दर्य का प्रकाशन सम्मिलित है। मेरी शुभकामनायें इस युवा कवि के साथ हैं उसकी कल्पना से हिन्दी कविता की सौन्दर्य वृद्धि होगी, इसमें सन्देह नहीं।

– श्री सुमित्रानन्दन पंत (12.12.1954)

3. 'प्रांजलि' के रूप में उदीयमान कवि का यह नवाभिर्भाव भी कम मनोहारी नहीं है। प्रांजलि की पाण्डित्यपूर्ण भूमिका पढ़ जाइये, पता चल जायेगा कि इनका ज्ञान, भावना और काव्यत्व कितना प्रखर और प्रांजल है।

– वैद्य हनुमत् प्रसाद शास्त्री (04.07.1954)

4. प्रस्तुत संकलन का गीति काव्य पचास वर्ष पुराना होते हुए भी चिर नवीन एवं अपनी सम्पूर्ण भव्यता के साथ प्रस्तुत है। इस काव्य का शब्द-शिल्प और भावयोग दोनों ही दर्शनीय हैं, जो कवि को युगचेता और युगधर्मा बना देते हैं। वह एक साथ शान्ति और क्रान्ति दोनों का गायक बन जाता है।

– डॉ. वासुदेव पोद्दार (27.06.2007)

5. हमारी चेतना यात्रा पूर्ववर्ती शरीर को छोड़ती परवर्ती को ग्रहण करती न जाने कैसे-कैसे संस्कारों से मंडित होकर गतिशील रहती है। अन्यथा अठारह वर्ष की ही नई अवस्था में यह भावधारा कैसे उमड़ पड़ती?

– श्री राममूर्ति त्रिपाठी (04.05.2012)

6. प्रांजलि ने महादेवी जी वर्मा की 'यामा' की सुधि करवा दी। इस कृति की भूमिका से इस निष्कर्ष को बल मिला कि गद्य ही कवि कर्म की कसौटी है।

– डॉ. इमरै बंघा (ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, यू.के.) (21.01.2015)

संग्रहालय में पधारे विशिष्ट महानुभावों के अनुभव एवं उद्गार

संग्रहालय का शुभारम्भ पर केन्द्रीय शिक्षा राज्य मंत्री श्री भक्त दर्शन (दायें) (25.04.1970)

श्री बलिराम भगत, महामहिम राज्यपाल को संग्रहालय में आयोजित वेद प्रदर्शनी का अवलोकन कराते श्री [illegible] शर्मा (19.12.1993)

पूर्व राष्ट्रपति महामहिम डॉ. शंकर दयाल शर्मा के साथ संस्थापक अध्यक्ष श्री रामकृपालु शर्मा। पूर्व राष्ट्रपति द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक सम्मेलन के दौरान संग्रहालय द्वारा आयोजित 'वैदिक प्रदर्शनी' के अवसर पर श्री रामकृपालु शर्मा को सम्मानित किया गया। (21.03.1998)
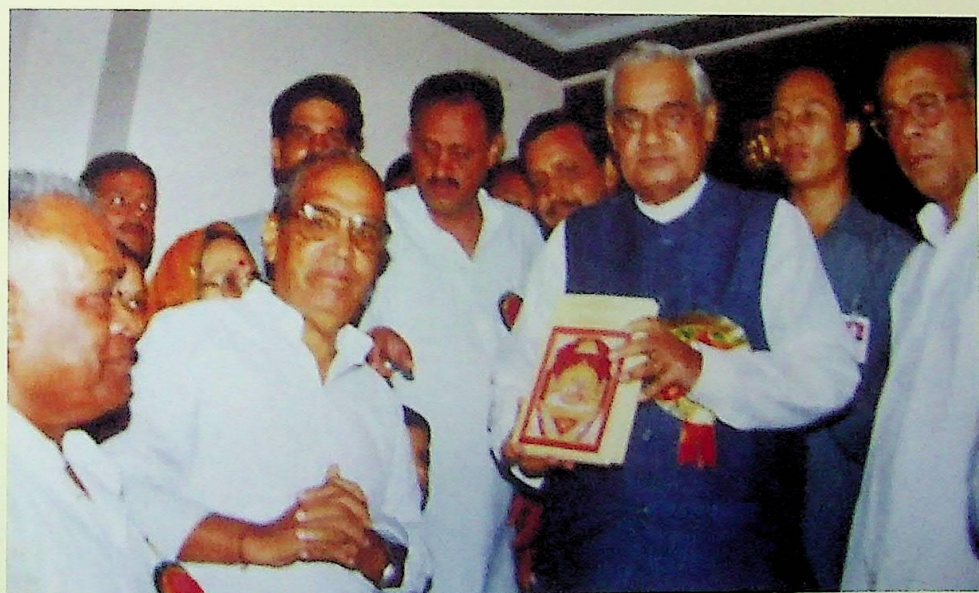
माननीय प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वायपेयी संग्रहालय के प्रथम प्रकाशित ग्रन्थ 'श्रीललितासहस्रनामस्तोत्रम् सटीक' का लोकार्पण। साथ में हैं श्री रामकृपालु शर्मा, श्री भंवरलाल शर्मा, स्वायत्त शासन मंत्री, राज. व अन्य। (22 अगस्त, 1998)

केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ. मुरली मनोहर जोशी द्वारा संग्रहालय का लोकार्पण। मंचासीन श्री जोशी (मध्य में), उनके दायें आचार्य गिरिराज किशोरजी एवं संस्थान के अध्यक्ष श्री रामकृपालु शर्मा, बायें श्रीमती ज्ञानसुधा मिश्र, न्यायाधीश, राजस्थान उच्च न्यायालय तथा उद्योगपति श्री शान्तिलाल जी सोमेया (12 फरवरी, 1999)

सामाजिक संस्था 'अर्चना' के माध्यम से कलकत्ता के मारवाड़ी समाज के सौजन्य से पूर्व केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डॉ. प्रताप चन्द्र 'चन्दर' द्वारा 'शारदा सम्मान' से अलंकृत किया गया। (11.9.1999)

कलकत्ता में आयोजित प्रदर्शनी के उद्घाटन के बाद श्री विष्णुकान्त शास्त्री, पश्चिम बंगाल सरकार के पूर्व मुख्य सचिव श्री तरुण दत्ता के साथ श्री रामकृपालु शर्मा एवं नथमलजी केडिया। (11.09.1999)

राजस्थान के माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत को संग्रहालय का अवलोकन करवाते श्री तिलक शर्मा। साथ में हैं श्री रामकृपालु शर्मा, मंत्री श्रीमती आकिया व अन्य। (18.04.2002)

माननीय मुख्य मंत्री श्री भैरोंसिंह शेखावत संग्रहालय का अवलोकन करते हुए। साथ में हैं श्री रामकृपालु शर्मा, मंत्री श्री भंवरलाल शर्मा व श्री तिलक शर्मा। (14.07.2002)

न्यायमूर्ति श्री अंशुमान सिंह, महामहिम राज्यपाल, राजस्थान श्री संजय शर्मा संग्रहालय का अवलोकन करते हुए। साथ में हैं श्री रामकृपालु शर्मा, श्री तिलक शर्मा एवं अन्य। (15.09.2002)

श्री निर्मल कुमार जैन, महामहिम राज्यपाल, राजस्थान श्री संजय शर्मा संग्रहालय का अवलोकन करते हुए। साथ में हैं श्री रामकृपालु शर्मा, डॉ. कलानाथ शास्त्री, डॉ. हरिराम आचार्य, श्री के.एल. जैन एवं अन्य। (23.08.2003)

राजस्थान की माननीय मुख्य मंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे संग्रहालय का अवलोकन करते हुए। साथ में हैं संग्रहालय के संस्थापक श्री रामकृपालु शर्मा। (28.05.2005)

श्रीमती प्रतिभा पाटील, महामहिम राज्यपाल, राजस्थान, कोटा में गणतंत्र दिवस के अवसर पर संस्थापक अध्यक्ष श्री रामकृपालु शर्मा को प्रशस्ति-पत्र से सम्मानित करते हुए। (26.01.2007)

आमेर रोड स्थित नवीन संग्रहालय भवन का लोकार्पण करते हुए माननीया श्रीमती ज्ञानसुधा मिश्र, न्यायाधीश। साथ में हैं संस्थापक श्री रामकृपालु शर्मा एवं अन्य अतिथिगण। (15.09.2013)

संग्रहालय में पधारे विशिष्ट अतिथियों के उद्‌गार

45 वर्षों की एकनिष्ठ और सतत साधना से जो संग्रहालय श्री रामकृपालु शर्मा ने बनाया है वह भारतीय संस्कृति और साहित्य का अनुपम तीर्थ है। संस्कृति और कला के अनुरागियों के लिए यह श्रद्धा और प्रेरणा का विषय है।

– **अटल बिहारी वाजपेयी,** प्रधान मंत्री,
भारत सरकार (22 अगस्त, 1998)

पं. रामकृपालु शर्मा की लगभग अर्द्ध शताब्दी की सतत साधना एवं भारत की संस्कृति के प्रति अनुराग के फलस्वरूप इस विलक्षण संग्रहालय का निर्माण संभव हुआ है। इस संग्रहालय को देखना अपनी समृद्धिशाली विरासत से साक्षात्कार करने के समान है।

– **भैरोंसिंह शेखावत,** नेता प्रतिपक्ष,
राजस्थान विधान सभा (14 जुलाई, 2002)

यह राष्ट्र की निधि है। इस कार्य में प्रदेशवासियों को सहयोग करना चाहिए। बिना किसी सरकारी सहायता के अपने ही संसाधनों से ऐसे बड़े संग्रहालय का निर्माण और संरक्षण करना श्री रामकृपालु शर्मा जैसे बिरले व्यक्तियों का कार्य है।

– **न्यायमूर्ति अंशुमान सिंह,** राज्यपाल,
राजस्थान (15 सितम्बर, 2002)

हमारी वैदिक सम्पदा, कला साहित्य, संस्कृति का जो संरक्षण रामकपालु शर्मा और उनकी धर्मपत्नी ने किया है वह अन्यत्र दुर्लभ है।

– **शंकर दयाल शर्मा,** पूर्व राष्ट्रपति,
भारत सरकार (21 मार्च, 1998)

मुझे आशा है कि आप अपने संग्रहीत हस्तलिखित ग्रन्थों को भली प्रकार सुरक्षित रखेंगे और उनका सर्वोत्तम उपयोग करने में सफल होंगे।

– **श्री भक्त दर्शन,** केन्द्रीय शिक्षा राज्य मंत्री,
भारत सरकार (25 अप्रेल, 1970)

अपूर्व दुर्लभ ग्रन्थों, हस्तलिखित पांडुपलिपियों का संग्रह – इसे सुरक्षित रखना अति पुनीत कार्य है।

– **बलिराम भगत,** राज्यपाल, राजस्थान
(18 दिसम्बर, 1993)

मुझे विश्वास है कि संग्रहालय की सामग्री शोधकर्ताओं, पर्यटकों और पुरातत्त्व अन्वेषियों को राजस्थान की विरासत की महत्ता का ज्ञान कराने में सहायक होगी।

– **अशोक गहलोत,** मुख्य मंत्री,

राजस्थान (30 मार्च, 2002)

इसे देखकर मैं विस्मय से अभिभूत हो गया, यह पं. रामकृपालु शर्मा का एक अनूठा प्रयास है। स्व. संजय शर्मा के नाम से यह शोध संस्थान हम सबके लिए गौरव प्रदान करता है।

– **नवल किशोर शर्मा,** पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं

पूर्व राज्यपाल, गुजरात (21 मार्च, 1998)

श्री संजय शर्मा संग्रहालय एवं शोध संस्थान बहुमूल्य एवं उपयोगी ग्रन्थों का बड़ा संग्रहालय है। बड़ी संख्या में शोध छात्र-छात्राओं ने इस संस्थान का लाभ लिया है। यह जयपुर का अपना एक विशिष्ट संस्थान है।

– **डॉ. कमला,** पूर्व राज्यपाल,

गुजरात (26 सितम्बर, 2002

श्री संजय शर्मा संग्रहालय और उसके संस्थापक श्री रामकृपालु शर्मा ने मेरे मानस-पटल पर जो प्रभाव अंकित किया है वह शब्दातीत है। संस्कृति के रक्षण का यह अद्भुत प्रयास है और देशों की अनेक संस्थाओं को आदर्श रूप में प्रेरणा दे सकता है।

– **आचार्य किशोर व्यास,** संस्थापक अध्यक्ष,

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान

पुणे-आलिंदी-संगमनेर, महाराष्ट्र

ग्रन्थ प्रभु का साक्षात् विग्रह है। श्री संजय शर्मा संग्रहालय एवं शोध संस्थान जयपुर का एक विलक्षण देवालय है जहां लाख ग्रन्थ रूपी देव विग्रह विराजमान हैं। भाग्योदय होने से ऐसे देवालय के दर्शन प्राप्त होते हैं।

– **श्रीवत्स गोस्वामी,** गंभीरा,

जयसिंह घेरा, वृन्दावन (31 मार्च, 2001)

श्री रामकृपालु शर्मा एक व्यक्ति नहीं अपितु एक संस्था हैं। निश्चित रूप से इनके पीछे दैवीय शक्ति कार्य कर रही है। श्री संजय शर्मा संग्रहालय को देखकर कल्पनातीत क्षमता का दर्शन होता है।

– **स्वामी राघवाचार्य,**

वेदान्ती अग्रपीठाधीश्वर, रैवासाधाम, सीकर (7 मार्च, 2001)

संजय शर्मा संग्रहालय के संक्षिप्त किन्तु गहन परिचय के बाद मैं सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की अनुभूति से अभिभूत हो गया हूँ।

– विनांत कैलेवर्ट, ब्लिजेड इन्कम्ट स्ट्रीट–21 3000,
ल्युवेन, (दीपावली, 1998)

मैं अपने अमरीकी साथियों को इस अनोखे अभिलेखागार के बारे में बताऊंगा जो विशेष ऊर्जा, त्याग और समर्पण के साथ बनाया और संरक्षित किया गया है।

– डॉ. फिलिप लटगैंडार्फ, एसोसियेट प्रोफेसर (हिन्दी)
आइवा यूनिवर्सिटी, यूएसए (14 जुलाई, 1996)

रामकृपालु शर्मा से मिलकर और उनके सुव्यवस्थित संग्रहालय और कला–वस्तुओं को देखकर प्रसन्नता की अनुभूति हुई। उनके संग्रह से भारतीय संस्कृति के प्रति उनके समर्पण भाव का पता चलता है।

– स्टुअर्ट कैरी वेल्च, कला एवं संग्रहालय,
हारवर्ड विश्वविद्यालय, कैम्ब्रिज,
यूएसए (10 फरवरी, 2002)

यह संग्रह जयपुर, राजस्थान और भारत के गौरव का संग्रह है और मुझे बहुत खुशी है कि आजकल जब सब लोग पैसे के पीछे दौड़ते हैं, रामकृपालु शर्मा जैसे लोग भी मिलते हैं जो जानते हैं कि धन को किस लिए समर्पित करना महत्त्वपूर्ण है।

– इम्रे बंगा, गोय जिची, यू4/बी,
हंगरी (22 सितम्बर, 1997

अद्वितीय संग्रहालय देखकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई। परन्तु साथ–साथ दुःख भी हुआ कि आजकल बहुत कम लोग हैं जो भारतीय अनमोल विरासत में रुचि लेते हुए उस पर श्रम और शोध–भक्ति भी अर्पित करने को तैयार हैं।

– मोनिका बोहेम, निदेशक, साउथ एशिया इन्स्टीट्यूट
हीडेल्सी यूनिवर्सिटी, जर्मनी (16 सितम्बर, 1997

आपने मुझे अति प्राचीन व मूल्यवान साहित्य सामग्री की जानकारी लेने का अवसर दिया। मुझे यह संग्रहालय और इसमें संग्रहीत सामग्री बड़ी आकर्षक व शिक्षाप्रद लगी।

– कपिला वात्स्यायन, अध्यक्ष, इन्दिरा गांधी
राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली (30 मार्च, 1997)

यह श्री रामकृपालु शर्मा के सम्पूर्ण जीवन की समर्पित साधना का ऐसा अमरफल है जिसके लिए जयपुरवासी सदियों तक गर्व करते रहेंगे। समस्त देश के प्राच्य विद्याविदों को इन्होंने अध्यवसायपूर्ण संकलन साधना से ऋणी बना दिया है।

– **डॉ. कलानाथ शास्त्री,** अध्यक्ष,
राजस्थान संस्कृत अकादमी (24 जुलाई, 1997)

निस्सन्देह यह संग्रहालय हस्तलिखित दुर्लभ पाण्डुलिपियों के रूप में शताब्दियों में संचित वाङमय का ऐसा विस्मयकारी अमूल्य भण्डार है जिसे देखने के बाद यह विश्वास करना कठिन हो जाता है कि यह किसी एक व्यक्ति की सतत साधना और अदम्य निष्ठा का प्रत्यक्ष रूप है।

– **डॉ. हरिराम आचार्य,** अध्यक्ष, राजस्थान
संस्कृत अकादमी (10 अक्टूबर, 2002)

मैं इस संस्थान के संग्रहालय के संग्रह तथा श्री राम कृपालु शर्मा की दूरदर्शिता और प्राचीन हस्तलिखित पांडुलिपियों और पेंटिंग्स में इनकी गहरी रुचि को देखकर मंत्रमुग्ध हूँ।

– **न्यायमूर्ति श्रीमती ज्ञान सुधा मिश्रा,** न्यायाधीश,
राजस्थान उच्च न्यायालय (16 मई, 1997)

वास्तव में उल्लेखनीय एवं दर्शनीय स्थान, ऐसा संग्रह जो एक व्यक्ति के समर्पण तथा इतिहास, संस्कृति और कला के प्रति उसकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। यहां कला के नमूनों को एक साथ रखते हुए बड़े प्रेम और सलीके से प्रदर्शित किया गया है।

– **डॉ. मार्कंड एलेसेंड्रा सोफर,**
लंदन (11 मार्च, 2000)

श्री रामकृपालु और उनके परिवार ने भारतीय सभ्यता और मानवता के लिए महत्त्वपूर्ण काम किया है। मनुष्य जानवरों से इसलिए अलग है कि हम अपने इतिहास और परम्परा की याद लेकर आगे चलते हैं जिसका आधार यहां का अमूल्य संग्रह है।

– **झिंक मिन्यु,** डिपार्टमेन्ट आव्
साउथ-एशिया स्टडीज, बीजिंग,
चीन (18 अप्रैल, 2015)

इस संग्रहालय में पूरे भारत के ऐतिहासिक ग्रन्थ और उनका अद्‌भुत संरक्षण है। श्री रामकृपालु शर्मा ने अपना सारा जीवन इन ग्रन्थों के संग्रह और संरक्षण के लिए व्यतीत कर दिया है। आपके समर्पण के लिए क्या कहा जाए! धन्यवाद

– **किस्टान मरवा कार्वस्का,** न्यूयॉर्क (14 नवम्बर, 2014)

श्री संजय म्यूजियम ज्ञान का अद्‌भुत खजाना है। भारतीय कला-संस्कृति, इतिहास, धर्म-दर्शन आदि विविध विषयों को यहां एक साथ देखा जा सकता है।

– **आचार्य श्री सुभद्र मुनि,** परवाना रोज,
पीतमपुरा, दिल्ली (14 जून, 2015)

हम यहाँ आये तब हमें पता नहीं था कि यहां से क्या अपेक्षा की जा सकती है, लेकिन आपके विलक्षण एवं समृद्ध संग्रह को देखकर अवाक् रह गये। यह स्थान वास्तव में एक देन है विशेष रूप से कपड़े की पेंटिंग्स वाला कक्ष और विभिन्न खगोल विद्या सम्बन्धी पाण्डुलिपियों वाला कक्ष तो हर तरह से चित्ताकर्षक है।

– **केल्सी ग्रे,** बोल्डर कंपनी (4 दिसम्बर, 2013)

यह भारत में अब तक देखी गई विभिन्न कलाकृतियों का सबसे अद्‌भुत संग्रह है। यह मेरे लिए शानदार अनुभव और उत्कृष्ट मार्गदर्शन है। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

– **आई. कैटलिन,** हंगरी (अक्टूबर, 2013)

यह वास्तव में जादुई संग्रह है। पेंटिंग्स आश्चर्यचकित करने वाली हैं तथा मैनचेस्टर में रहते हुए यह सम्पर्क दिलचस्प था। विलक्षण और महत्त्वपूर्ण काम। मैं पांडुलिपियों के विशाल संग्रह के सफल अभिलेखागार के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने की आशा करता हूँ। एक विशाल एवं महान संग्रह से बहुत कुछ सीखा और प्रभावित हुआ, बहुत दिलचस्प है।

– **सैमुअल हेरर,** मैनचेस्टर, यू.के. (1 अप्रैल, 2016)

बहुत बड़ा और अद्‌भुत संग्रहालय। इसे देख मैं पूरी तरह से उत्साहित और रोमांचित हूँ, एक खूबसूरत स्थान और बहुत बेहतरीन गाइड।

– **कैथेन ब्लान,** स्विट्ज़रलैंड (20 जनवरी, 2015)

अविश्वसनीय! यहाँ इतनी निराली और मनमोहक कृतियां हैं। और दोस्तों संग्रहालय खाली रहता है ... कृपया इस अद्‌भुत संग्रहालय के बारे में प्रचार-प्रसार करें। और हमारे आकर्षक और ज्ञानवान गाइड के लिए बहुत धन्यवाद।

– **अलेक्जेण्डर गोर्लिज़्की,** ब्रुकलिन, न्यूयॉर्क, अमेरिका

ऐतिहासिक कृतियों के अद्‌भुत संग्रह का शानदार प्रदर्शन। विशेष रूप से भारतीय और राजस्थानी विरासत की 19वीं सदी की कृतियाँ जिनकी एक बुद्धिमान गाइड द्वारा अच्छी तरह से व्याख्या की गई।

– **माइकल एस. पेवि,** मेलबर्न, ऑस्ट्रेलिया
(27 मार्च, 2018)

यह प्राचीन पाण्डुलिपियों का सबसे बड़ा निजी संग्रह है जिसे मैंने अपने जीवनकाल में देखा है। मुझे आश्चर्य होता है कि इन निधियों (खजाने) को देखने के टिकट के लिए कोई कतार क्यों नहीं लगती। .... यह संस्थापकों और रख-रखाव करने वालों द्वारा इसका विकास करने एवं प्राचीन ज्ञान के प्रसार में बाधक है। दुनिया के लोगों, सरकारों को वित्तीय सहायता देना बन्द करो जो हथियारों का उत्पादन करते हैं, ज्ञान में निवेश करो और दुनियाभर में जीवन स्तर के सुधार और विज्ञान में निवेश करो। इन पुस्तकों का इस्तेमाल सभी के जीवन को बेहतर, खुशहाल एवं सुरक्षित बनाने में करो।

– अमिते ब्रुहानोर, येकाटेरिसबर्ग,
रूस (6 जनवरी, 2015)

एक चकित करने वाला संग्रह जो प्रेम का श्रम है। भारत की विरासत को संरक्षित करने का एक सराहनीय प्रयास। मैं कई बार यहां लौट कर आने की आशा करता हूँ। ईश्वर करे यह साहित्यिक संग्रहालय खूब फूले-फले।

– विक्रम चंद्र, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय,
बार्कले, सीए यूएसए (21 जनवरी, 2014)

बहुत अच्छा! बहुत-सी दिलचस्प ऐतिहासिक वस्तुएँ। कालीन, चित्र, पाण्डुलिपियां और अन्य - जबरदस्त कृतियां। हम अपने मित्रों एवं अन्य पर्यटकों के लिए दर्शनीय इस संग्रहालय की अभिशंसा करते हैं।

– एलैक्जेंडर और एलैक्जेंडर समसेंव,
मॉस्को, रूस (14 अप्रैल, 2018)

सह–संस्थापिका

श्रीमती पद्मावती शर्मा

जन्म : 1936 – पुण्य तिथि : 26 जनवरी, 2016

मैं अपने आपको बड़ा सौभाग्यशाली मानता हूँ कि पद्मावती के रूप में मुझे एक ऐसी जीवनसंगिनी मिली जो मेरे संघर्षशील जीवन की सहभागी बनी। सहयोग एवं समर्पण की प्रतिमूर्ति पद्मावती ने सुख–दुःख में ही नहीं संग्रहालय के निर्माण में भी पग–पग पर मेरा साथ दिया। उनके समर्पण में विश्वास की अथाह ऊर्जा थी। जीवन–पर्यन्त अपने दायित्वों के प्रति समर्पित रही पद्मावती ने इसी ऊर्जा से पूरे परिवार का पालन–पोषण किया। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी उनके स्नेह ने अपने बच्चों में सद्संस्कारों का बीजारोपण किया। यद्यपि आज वह सदेह हमारे साथ नहीं है लेकिन जो भरा–पूरा परिवार छोड़कर गई है वह इतना सुसंस्कारी और कर्त्तव्यपरायण है कि मैं अपने परिवार के प्रति गर्वानुभूति से अभिभूत हूँ।

त्याग और सेवा के प्रति समर्पित सहधर्मिणी पद्मावती का संग्रहालय के निर्माण में भी भरपूर सहयोग मिला है। दिव्यात्मा संजय के साथ ही हम पद्मावती के भी ऋणी हैं और उनकी चिरस्मृति को संजोना हमारा पावन कर्त्तव्य है।

रामकृपालु शर्मा
संस्थापक अध्यक्ष

द्वितीय संस्करण : 2019
प्रस्तुतिकरण : चैतन्य शर्मा
मो. : 9602831978
मुद्रक : पापुलर प्रिन्टर्स, जयपुर
मूल्य : 200 रुपए

वागीश्वरी प्रकाशन
श्री मायतन 1662, ठठेरों का रास्ता,
चौड़ा रास्ता, जयपुर

ज्ञानमेव परंज्योतिः

संस्थापक – रामकृपालु शर्मा

भारतीय साहित्य एवं प्राच्य विधाओं, पाण्डुलिपियों के गहन अनुरागी पं. रामकृपालु शर्मा का जन्म 4 सितम्बर, 1932 को हुआ। मात्र 13 दिन की अल्पायु में मातृ वियोग हुआ। नाना-नानी के घर शैशवी दुलार एवं संस्कार प्राप्त हुए। प्रारम्भिक शिक्षा ग्राम ढोढसर में हुई एवं संस्कृत शिक्षा चीथवाड़ी एवं वाराणसी में सम्पन्न हुई, आयुर्वेद अध्ययन रामगढ़ शेखावाटी में हुआ। 15 वर्ष की आयु में पद्मावती देवी (पानादेवी) से विवाह हुआ।

18 वर्ष की आयु में विद्वानों द्वारा प्रशंसित गद्य पद्यमयी ''प्राञ्जली'' नामक रचना का प्रकाशन हुआ। तदुपरान्त ''वाङ्मयी'' की रचना की जिसका अर्थाभाव के कारण प्रकाशन नहीं हो सका। इसी अन्तरवेदना ने इनको प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों के संग्रह की ओर अग्रसर किया। मात्र चार हस्तलिखित ग्रन्थों के संग्रह को आपने 1 लाख पाण्डुलिपियों के संग्रह में परिवर्तित कर दिया एवं ग्रन्थों के विज्ञान को समझाने हेतु चित्र, कलाकृतियों का संकलन कर कालान्तर तक सुरक्षित करने हेतु एक आधुनिक विशाल संग्रहालय का निर्माण किया।

संग्रहालय के प्रेरणास्त्रोत अपने कनिष्ठ पुत्र पुण्यात्मा संजय शर्मा की असाध्य बीमारी से स्वर्गवास हो गया। तदुपरान्त शर्मा ग्रन्थ संग्रहालय का नामकरण ''श्री संजय शर्मा संग्रहालय एवं शोध संस्थान पुण्यात्मा के नाम से कर इसे एक संस्था का रूप दिया। मात्र शिक्षक के रूप में अपनी आजीविका की शुरुआत पर इन्होंने कृषि, रत्न व्यवसायी के रूप में भी अपनी प्रतिष्ठा बनाई।

आपकी अनेक वार्ताएं एवं व्याख्यान प्राच्य विधाओं पर अनेक संस्थाओं, रेडियो, टीवी पर प्रसारित हो चुके हैं। इस कार्य हेतु अनेक संस्थाओं एवं राज्य सरकार ने भी इन्हें सम्मानित किया है। अनेक बार आपने प्राच्य विधाओं की जागृति हेतु प्रदर्शनी का भी आयोजन किया है।

सन् 1955 से लेकर आज तक उपरोक्त सम्पूर्ण कार्य आपने अपने स्व अर्जित धन से किया है जो कि अत्यन्त कष्ट साध्य एवं अर्थ साध्य रहा है। इसका सम्पूर्ण श्रेय सर्वशक्तिमान जगन्नियन्ता को ही जाता है। यही कारण है कि अभी भी ओर हस्तलिखित ग्रंथों के अधिक से अधिक संग्रह के लिये कृत संकल्प है। इसके लिए निरन्तर भ्रमणशील भी रहते है। वर्तमान में ग्रन्थों के सूची करण तथा प्रकाशन में संलग्न है।